मासिक—

मानव मन्दिर

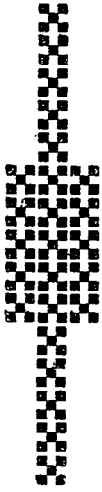

सम्पादक :— एम. आर. भक्त
पी. एस. ई (रीटार्यड)

वर्ष ५ | शनिवार १० फरवरी १९७९ | संख्या १०

चण्डीगढ़ में अमृत वर्षा

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज

डाक्टर अहूजा साहिब के मकान न० 2412 सेक्टर 18-C चण्डीगढ़ पर तिथि 28-5-77

१९०५ में मुझे एक दृश्य आया जिसके अन्तर्गत मैं दस महीने हर हफ्ते दाता जी को खत लिखता रहा! इसके बाद उन्होंने लिखा फकीर, तेरे खत मिलते रहे हैं। मैं तेरे ख्यालात की इज्जत करता हूं मगर मैंने हकीकत, असलीयत, सच्चाई और शान्ति राधास्वामीमत में हजूर पवित्र विभूति राय सालिग राम साहिब से हासिल की है! अगर तुमको इस रास्ते पर चलने से इन्कार न हो तो लाहौर आ के मिल सकते हो उस समय मैंने समझा कि राधा कृष्ण कोई मत होगा। संयोगवश जिस दिन सुबह चिट्ठी

आई तो मैंने छुट्टी के लिये पहले दरख्वास्त दी हुई थी ! दूसरा स्टेशन मास्टर मेरी जगह आ गया और मैं लाहौर पहुंचा। मैं उन्हें राम समझ कर उनके पास पहुंचा। उन्होंने मुझे नाम दान दिया और कहा "सार बचन नज्म पढ़ो" ! जब मैंने यह पढ़ी तो माया सम्वाद में सबका खण्डन था। राम, कृष्ण, काल के अवतार, वेदान्ति भी नहीं पहुंचे, जैन मुनि भी नहीं पहुंचे, बुद्ध मुसलमान सब भूल गये, तो यह सब कुछ पढ़कर मैं चक्कर खा गया और रोने लगा, वह पूछते हैं क्यों ? मैंने कहा खण्डन सहा नहीं जाता ! कहने लगे छोड़ दो, समय आयेगा जब तुम समझोगे कि यह क्या लिखा हुआ है ! उस वक्त मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर सच्चा होकर चलूंगा जो मेरा अनुभव होगा बता जाऊंगा ! अब आप खुद सोचो कि एक ब्राह्मण को यह कहा जाये कि राम, कृष्ण काल के अवतार हैं, व्यास नहीं पहुंचा, पाशर भी भूल गया, तो मेरे दिल की क्या हालत होगी। मेरा विश्वास दाता से तो टूटता नहीं था पंथ की समझ नहीं आती थी। क्योंकि पंथ में गुरु की सेवा करनी बताई गई थी तो मेरे से जो कुछ हो सकी,

दुर्गादास जानता है, मैंने की। यह बात मुझे समझ नहीं आती थी, कि संतमत वालों के पास क्या हक है, क्या कारण है, जिसके सहारे यह सबका खण्डन करते हैं और अपने आपको ऊंचा बताते हैं। इसका मुझे पता नहीं लगता था। तो मैं दाता को तंग किया करता था कि मुझे वह घर बता दो जिसका उल्लेख संत करते हैं। बग़दाद से आया सुबह 8 बजे से शाम के 5 बजे तक तंग किया करता और कहता कि मुझे वह घर बतादो जो तुम्हारा राधास्वामीमत कहता है। कहने लगे सुबह बताऊंगा। सुबह जब मैं गया तो उन्होंने कहा, कर झोली ! मैंने झोली की तो उन्होंने 5 पैसे एक नारीयल मेरी झोली में डाल कर मत्था टेक दिया और मुझे कहते हैं कि मैं हुक्म देता हूं इसे मानो तुम्हें सच्चा सतगुरु उस घर पहुचाने वाला सत्संगियों के रूप में मिलेगा। तो मैंने बग़दाद में गुरु पदवी शुरू की तो उस वक्त मेरी आंखें खुलीं। और मैं आज उस बात का सबूत देता हूं कि संतमत क्या कहता है। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द, अगर तू सन्तों का पक्ष करेगा इस ख्याल से कि तू संत मत का पैरोकार है तो दुःखी होकर

मरेगा। मुझको संतमत की सच्चाई का पता आप लोगों से मिला। अगर मैं गुरु पदवी पर न आता तो मुझे कभी भी सच्चाई का पता न लगता और मैं संतमत के खिलाफ बहुत जहर उगल जाता। अब मैं मजबूर हूं। क्यों! लोग मेरा ध्यान करते हैं, मुझे कोई पता नहीं होता! कौन मेरा ध्यान करता है। उनके अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है। उनके काम पूरे हो जाते हैं। जाग्रत में, स्वप्न में, मेरा रूप उनकी मदद करता है। कोई बात कह देता है वह पूरी हो जाती है और मुझे कोई पता नहीं होता। अगर मैंने वही काम करना होता जो दूसरे गुरु करते हैं तो मुझे नई दुकान खोलने की कोई जरूरत नहीं थी। मैंने यह काम इस लिये किया कि इन मजहब वालों ने, पंथ वालों ने, मजहब की ग़लत समझ की वजह से, मानव जाति को अलग-अलग फिरकों में बांट दिया है और हम भोले भाले गृहस्थियों को मूर्ख बना कर लूटा है। इसलिए मैं यह काम करता हूं। मेरे जिम्मे तीन डियूटीयां हैं।

1. तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा,
   दुखी जीव को अंग लगकर, ले जा गुरु के देसा।

तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी,
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।

2. तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही,
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल स्नेही।

4. तू इराक से अब के आया, सत संगत के कारन,
ले प्रसाद यह सत संगत का, हो जा भव निधी तारन।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं ऐ फकीर चन्द, तू बता तू दुनियां के अज्ञान को कैसे दूर कर सकता है ? दूसरों की निर्बलता को कैसे दूर कर सकता है ? जीवों को भव सागर से पार कैसे ले जा सकते हो ? यह एक सवाल है जो मैं अपनी आत्मा से करता हूं। हमारी अबलता का कारण अगर कोई है तो वह है हमारा विषय विकार का जीवन। जो आदमी बचपन में या जवानी में जरूरत से ज्यादा विषय कमाता है उसमें अशान्ति का आना एक लाज़मी अमर है कोई उसको रोक नहीं सकता। इसका अनुभव मुझे अपनी जिन्दगी में हुआ। लोग नाम ले लेते हैं, विषय भोगते हैं फिर कहते हैं हमारे अन्दर घन्टा बजे, प्रकाश हो जाये यह नहीं हो सकता।

क्यों ? मैंने 1905 में नाम लिया और 1916 दिसम्बर तक जब मैं पहले महायुद्ध में नहीं गया था उस वक्त तक सिवाये रोने के या प्रेम के गीत गाने के और कुछ नहीं हुआ। कोई प्रकाश नहीं आया। मैं बसरा बग़दाद गया, वहाँ १२ साल अकेला रहा। क्योंकि वहां मेरा मानसिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य ठीक हो गया सिवाय दो बार के जब मैं डर गया। तो मेरे अन्तर प्रकाश भी हो गया, शब्द भी हो गया और मस्ती भी आई बीन भी सुनी। उसके बाद फिर जब वापिस आया तो दाता ने कहा कि तेरे औलाद नहीं है औलाद पैदा कर! अगर मैं औरत के पास सिर्फ औलाद पैदा करने के लिये जाता तो मुझे कोई दुख न होता, मैं तो गया अपने स्वाद के लिये। तो वह जो मेरी शान्ति थी वह चली गई। उस वक्त की मस्ती की जो मेरी फोटो है मन्दिर में लगी हुई है। जिन्होने देखी है वह जानते हैं कि कितनी नूर वाली फोटो है। मैं अफसोस करता था कि मुझे हो क्या गया। मै यह काम क्यों करता हूं? मैं काम करता हूं अपने जैसे बेवकूफों को सच्चाई ब्यान करने के लिये। उस वक्त क्या था मैंने बीन सुनी हुई थी, सूरज, चांद,

सितारे देखे हुये थे अभ्यास में। दुर्गा दास मेरे साथ था मैं जब रज़ाई को ऊपर लेकर के अभ्यास करता था इतनी ज्यादा रोशनी रज़ाई के अन्दर होती थी कि मैं उसमें से छत की कड़ीया गिना करता था फिर मैं घर आया। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं। क्या मैं कामी नहीं हुआ ? हुआ। स्टाफ मेरा लगती खाता था तो क्या मुझे गुस्सा नहीं आता था ? मैंने अनुचित पैसा नहीं कमाया लेकिन क्या मेरे दिल में यह इच्छा नहीं होती थी कि मेरी उन्नति हो जाये मेरी यह काम करने की गरज यह है कि मेरी तरह जो इस रास्ते पर चलते हैं उनको बता जाऊं कि सच्चाई क्या है ! जब मेरी शान्ति चली गई और मैं रोता था। वहां लाहौर से सत्संगी दाता का पत्र लेकर आये। उनका कोई सवाल था। तो दाता ने उन्हें कहा कि सुनाम स्टेशन पर फकीर चन्द स्टेशन मास्टर है उससे पूछ लो ! वह मेरे पास आये ! मैंने कहा मुझे कुछ नहीं आता क्योंकि मैं खुद अशान्त था। तो वह दाता के पास चले गये। तो दाता ने उनको कहा कि जिनको फकीर के पास से कुछ नहीं मिला उन्हें मेरे से भी कुछ नहीं मिलेगा।

जब वह खत लेकर मेरे पास आये तो मेरे मन मे कई प्रकार के ख्याल आये कि यह कैसा गुरुमत है ? मेरे पास तो है कुछ नहीं क्या लिख दिया उन्होंने ? तो उस समय मैं तम्बूरा बजाया करता था और प्रेम से गाया करता था। मैंने अन्तर में प्रार्थना करनी शुरु की और मैं वेहोश हो गया। अन्तर से आवाज आई कि फकीर चन्द, तुझ में काम का अवगुण है। जहाँ काम तहां नाम नहीं! जहां नाम वहां नहीं काम !! फिर मैंने अपने आपको संभाला। मैं दुनियाँ को यह सत्संग क्यों कराता हूं ? यह बताने के लिए कि ऐ इन्सान, ऐ भक्त बनने वाले, ऐ ईश्वर के भक्तो, तुम लाख भक्ति करो, अगर तुम काम को जरूरत से ज्यादा भोगते हो तो शान्ति नहीं मिलेगी जा चाहे कर लो। इस वास्ते मैंने यह काम किया। दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि कई लोग मुझे याद करते हैं, मेरा रूप प्रकट होता है मुझे कोई पता नहीं होता कि मुझे कौन याद कर रहा है मैं झूठ नहीं बोलता। यह जितने रूप रंग तुम्हारे स्वप्न में, अभ्यास मैं, प्रकट होते हैं यह वह हैं जो तुम्हारे Sub Conscious mind में मौजूद हैं हाल ही में यहां

एक फकीर चन्द डोगरा आया हुआ है। यह सारा परिवार मेरी इज्जत करता है। दो साल हुये इनकी माता के अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ और कहा कि माई, तुमने मेरा कर्जा देना है। तू मेरा कर्जा दे दे। उसने मुझे चिट्ठी लिखी तो मैंने उसे कहा कि माई, यह तेरे अपने ही मन का खेल है। मैंने बहुत समझाया वह मानी नहीं! वह बूढ़ी है। उसने अपने सब चाँदी के ज़ेवर जो ७०, ८० तोले चाँदी के हैं उनको तुड़वा कर एक झंडा बनवा कर वह मेरे मकान पर छोड़ गई। तो ऐसी २ बातें कई लोगों के साथ होती हैं। तुम्हारे अन्तर कोई रूप प्रकट होता है, किसी के अन्तर राम का रूप प्रकट होता है, किसी के अन्तर देवी प्रकट होती है, किसी के अन्तर गुरु प्रकट होता है। यह जो कुछ भी होता है यह कौन होता है? ऐ भोले भाले इन्सान, जिस प्रकार के संस्कार (*Suggestions and impressions*) तुम्हारे दिमाग़ के ऊपर पड़े हुये हैं, वह फुरते हैं, और भिन्न २ शक्लें बनकर प्रकट होते हैं। इन पंथ वालों ने, मज़हब वालों ने धोखा दिया है। जब मैं ज़िन्दा होशियारपुर बैठा हुआ किसी के अन्दर नहीं

जाता और लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है और मुझे कोई पता नहीं होता तो मैं कैसे मानूं कि कोई मरा हुआ आदमी या गुरु आता है। यह सब खेल तुम्हारे मन का है। हमें इस मन का पता नहीं है। मन के चक्कर में आये हुये हैं।

मन के नाच सारे नाचे नाचें, ऋषि मुनी देवा।

मैं यहां किसी ध्येय को लेकर आया हूं मेरे जिम्मे काम है। दाता ने कहा था फकीर, चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना, मैं शिक्षा को बदले जा रहा हूं। सब गुरु नाम देते हैं। मैंने १९४२ के बाद किसी को नाम नहीं दिया हालांकि मैं दो डिगरी होल्डर हूं। एक दाता दयाल जी महाराज से दूसरी बाबा सावन सिंह जी से। अगर मैंने छः हजार आदमी को नाम भी दिया होता और एक आदमी एक रुपया प्रति महीना मुझे देता तो मेरे पास छः हजार रुपये महीने के आते। मैं किसी को नाम नहीं देता, १९४२ में मेरे साथ एक घटना घटी, एक औरत जबलपुर निवासी थी। उसका पति *Inspector of Tele raph* था, तीन बच्चों को लेकर होशियारपुर

मेरे पास आई, मैं वहां नहीं था, वह फिर फिरोजपुर आई। वह त्रिकुटी में अभ्यास करती थी वह लाल रंग के सूरज में मेरा रूप देखती थी। कहने लगी मेरी मदद करें। यह बच्चे मुझे तंग करते हैं। मैंने उससे पूछा तेरी सास है, कहा नहीं, मां है, नहीं, ननंद है, नहीं, मैं यह भाषण तुमको दर्दे दिल से दे रहा हूं! तुम समझो या न समझो। यह मेरा काम नहीं। मेरे ऊपर गुरु का एक कर्जा है उसको उतारना चाहता हूं? उन्होंने कहा था। तालीम बदल देना, मैं तालीम को क्या बदलूं। जो मैंने समझा वह कहता हूं। अब मैंने सोचा इसका और तो कोई है नहीं। त्रिकुटी में अभ्यास करती है। जो यह चाहती है वह हो जायेगा! वह बच्चों से बचना चाहती थी क्योंकि और कोई उपाय नहीं है इसलिये इसके बच्चे मर जायेंगे। मैंने उसे तो कुछ नहीं कहा, वहाँ पर मेरे मित्र बलिराम हकीम थे, उनको कहा कि एक बात बताऊं, मेरा अनुभव कहता है कि इस औरत के तीनों बच्चे मर जायेंगे और नौ महीने के अन्दर तीनों बच्चे मर गये। उसके बाद मैंने सोचा कि अगर मैं किसी अनाधिकारी को नाम दूंगा तो

यह लोग तो अपनी हानी कर लेंगे। जो आदमी नाम जपता है उसके *Sub-Conscious mind* में जो होता है वह *Develop* होता है। इस लिये नाम किसको मिलना चाहिये ? राधा स्वामी मत के अनुसार :—

विषयों से जो होये, उदासा, परमारथ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके, खोजत फिरे साध-गुरु जागे।

आज कल बारह २ साल के बच्चों को नाम दे दिया जाता है। उन्होंने गृहस्थ भोगनी होती है यह नाम तो इनको खा जायेगा ! यह गुरु लोग नाम नहीं देते जहर देते हैं। यह अपने नाम के लिये हमको चेले बनाते हैं मैं निर्भय होकर यह बात कहता हूं। अब इसका प्रमाण सुनो। हजूर महाराज राय सालिग राम साहिब जिन्होंने राधास्वामीमत चलाया वह अपनी प्रेम बाणी में साफ लिख गये हैं कि वह लोग जिनके मन गन्दे हैं मन को ठीक नहीं कर सकते या करना नहीं चाहते या अपने अशुद्ध विचारों को रोक नहीं सकते उनको यह शब्द अभ्यास नहीं करना चाहिये वरना उनका बहुत नुकसान होगा। मैं क्या कह रहा हूं सोचो मेरी बात को। मैं यह काम अपने मान के लिये नहीं करता। अगर

मैं भी पर्दा रखता तो आज मैं लाखों, करोड़ों रुपयों का मालिक हो जाता। जिन लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है पर्दा रख कर उनसे जितना मरज़ी रुपया कमा लेता। अब मुझे खास २ आदमियों के सिवाये कौन देता है। तो मैं यह काम क्यों करता हूं ? यह कहने के लिए कि अगर तुम्हारा मन पापी है और तुम इसे शुद्ध बनाना चाहते हो और इस ख्याल से तुम नाम जपो कि तुम्हारा मन साफ हो जाये तो वह साफ हो जायेगा। जिस प्रकार की वासना ले कर तुम साधना करोगे वह पूरी होगी ! इसका प्रमाण मैं अपनी जिन्दगी के तजुर्बे के आधार पर देता हूं। लोग हैं, जिस वासना को लेकर मेरा ध्यान करते हैं उनकी वासना पूरी हो जाती है। वह *Credit* मुझे देते हैं। मैं कसम खा कर कहता हूं कि मुझे कोई पता नहीं होता कि मेरा कौन ध्यान करता है। मैं सोचता हूं कि मैंने यह मकड़ी का जाल क्यों बनाया। मैं आया ही इसलिए हूं अनामी धाम से अवतार ले कर कि संतमत को साफ कर जाऊं ! तुम लोगों को हम सन्तों ने मूर्ख बना कर लूटा है। कोई सच्ची बात नहीं बताता ! कोई बताता है कि

मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। अगर कोई कही हुई बात ठीक हो गई तो कहते हैं लाउडस्पीकर लगा कर कि सुनो यह क्या कहता है अगर झूठ हो जाये तो कहते हैं यह तो काल का रूप था जो तुम्हारे अन्तर प्रकट हुआ था वह गुरु नहीं था। इस वास्ते मैं गृहस्थी भाईयों और बहनों को यह कहना चाहता हूं कि अगर तुम अपनी ज़िन्दगी बनाना चाहते हो तो पहले अपनी नीयत को ठीक करो। जब तुम अभ्यास करोगे, जैसी तुम्हारी नियत होगी वह पूरी होगी। दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि जो कुछ तुम्हारे अन्दर फुरना फुरती है और जो तुम समझते हो कि बाबा सावन सिंह आये या बाबा फकीर आये और यह गुरु लोग कहते हैं कि नाम ले तो अन्त समय तुम्हें गुरु ले जायेगा, अरे क्या कहूं तुमको। लोग मरते हैं और कहते हैं कि बाबा आया, हवाई जहाज़ लाया, पालकी लाया, घोड़ी लाया और मेरे तो बाप को भी पता नहीं होता कि कौन मर गया। अब तुम दुनियाँ में आये हो, जीने के दो रास्ते हैं एक प्रवृति मार्ग और दूसरा निवृति मार्ग। दुनियां में प्रवृति मार्ग के लिये तुम लोगों ने

क्या करना है ? जो मैंने अनुभव किया वह कहता हू दावा किसी बात का नहीं। आप बेशक अपने २ गुरुओं से कहो कि बूढ़ा फकीर ऐसे २ कहता है यह गलत है या ठीक ! आप को हक है खंडन करें। मैं कोई ठेकेदार नहीं। जो बात मेरी समझ में आई वह कहता हूं। अहूजा साहिब ने मुझे बुलाया है यह प्रेम करते हैं मेरी बड़ी तारीफ करते हैं मैं कहता हूं अहूजा जी ! मेरी तारीफ करने से तुमको कुछ नहीं मिलेगा। मेरी गुड्डी चढ़ाने से तुम सत लोक नहीं जाओगे ! मेरी बात सुनकर, समझ कर और उसपर अमल करने के बाद तुम्हारा बेड़ा पार होगा ! मेरी बड़ाई करने से तुम्हें क्या मिलेगा तो यह जो लोग कहते हैं कि गुरु आता है और अंत समय में ले जाता है यह गलत है। इसका परमाण देता हूं। हजूर महाराज राय सालिग राम साहब ने जिन्होंने राधास्वामीमत चलाया उन्होंने साफ लिखा है कि अन्त समय में फिल्म चलती है जिससे नाम लिया होता है वह भी आ जाता है। नाम भी सुना देता है। तुम्हारे सम्बन्धी भी आ जाते हैं। तो ऐसी

हालत में जब तुम मरोगे तो कुछ समय के लिये ऊपर के लोकों में रहोगे और फिर जब कभी संत सतगुरु वक्त संसार में आयेगा तो उसके सम्पर्क में आकर बाकी की कमाई पूरी करोगे। अब तुम्हारी सांईस क्या कहती है? तुममें जो बूढ़े २ आदमी सत्संग में आये हुये हैं। उनसे यह बात कहना चाहता हूं, नौजवानों के लिये यह बात नहीं।

U.S S.R., U.S.A. France, Switzerland के डाक्टरों ने यह साबित किया है कि जो चीज़ मरने वाले के अन्दर से निकलती है उसको परदे पर देखा गया। उन्होंने मरने वाले को *Sensitive Scale* पर रखा। उसका वज़न मरने से पहले लिया और फिर मरने के बाद लिया गया। किसी का वजन १० ग्राम घटा, किसी का २० ग्राम घटा। इसका मतलब यह हुआ कि जो चीज़ मरने वाले के अन्दर से निकली भारी थी। तो जो चीज़ भारी होगी, उसको ज़मीन की आकर्षण शक्ति उपर नहीं जाने देगी वह चीज़ भारी क्यों होती है। जिन पुरुषों का मोह मरते समय स्थूल पदार्थ से होगा। यह बात मैं अहूजा साहिब, दुर्गा दास और दूसरे जो पुराने २ सतसंगी हैं जो

मुझसे प्रेम करते हैं उनसे कहना चाहता हूं मैं इनको धोखा नहीं देना चाहता। तो मरते समय जिसका प्रेम गुरु से होगा बाप से होगा, माँ से होगा, गुरु के डेरे से होगा, ब्यास से होगा, आगरा से होगा बाबे फकीर से होगा, राम से होगा, मुहम्मद से होगा, कृष्ण से होगा, क्योंकि यह सब स्थूल पदार्थ हैं इनके साथ मोह के कारण शरीर से निकलने वाली चीज़ इन वासनाओं के भार से लदी हुई होगी और पृथ्वी की आकर्षण शक्ति इसको ऊपर नहीं जाने देगी! बेशक किसी ने सारा जीवन जो चाहे किया हुआ हो आवागमन से नहीं छूट सकता। बात सच्ची कह रहा हूं। अब बाबा सावन सिंह की बात सुनो वह कहा करते थे कि जो हरिद्वार से प्रेम करते हैं वह मरने के बाद हरिद्वार की मछलियां बनेंगी। अब मैं कहता हूं कि जो ब्यास से प्रेम करते हैं वह ब्यास की मछलीयां नहीं बनेंगी? और जो आगरे से प्रेम करते हैं और होशियारपुर से प्रेम करते हैं वह वहाँ की मछलियां नहीं बनेगी? सोचो मैं क्या कह रहा हूं तुम लोग सत्संग में आये हो गुरु सेवा करो। गुरु सेवा पैसे देने से ही नहीं होती! देना लेना

संसार का व्यवहार है। अगर पैसे देने से ही मुक्ति मिलती होती, तो बड़े २ सेठ पैसा देकर तर जाते ! गुरु भक्ति क्या है।

दर्शन करे वचन पुनी सुने,
सुन सुन कर नित मन में गुने।
गुन गुन काढ़ ले तिस सारा,
काढ़ सार तिस करे अहारा।

यह है गुरु भक्ति। मैं कह रहा हूं मेरी बात को ध्यान से सुनो। अगर में गलत हूं तो मेरे कान पकड़ो। अब सनातन धर्म की बात सुनो, उसमें चार आश्रम हैं, २५ साल तक ब्रह्मचर्य रखो। यही बात मैं कहता हूं कि शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य रखो, २५ से ५० वर्ष तक गृहस्थ आश्रम, फिर ५० से ७५ वर्ष तक बानप्रस्थ, स्त्री साथ रहे भोग मत करो। आज कल यह ५०, ६०, ७० साल के बूढ़े क्या करते हैं ? फिर ७५ वर्ष के बाद सन्यास ले लो सन्यासी हो जाओ। सन्यासी का क्या धर्म है ? तीन दिन से अधिक एक जगह ठहरना सन्यासी का धर्म नहीं है, क्यों। ताकि उस जगह के साथ उसका मोह

न हो जाये ! मैं गुरु बन कर अहूजा के साथ, या दुर्गा दास के साथ मोह करूं तो मैं कहाँ जाऊंगा तुम बताओ। मैंने इस लिये चेले ही नहीं बनाये ! अपनी गुरु की डियुटी पूरी कर दी ! तो मैं क्या कहना चाहता हूं कि अगर तुम इस संसार से पार जाना चाहते हो सुफी साहिब ! अगर कविता लिखने वाला पार हो जाये तो कौन सी बात थी। यह मनोरमा कितने भजन गाती है इसको कोई दुख हुआ मेरे पास आई- मैंने पूछा तेरी भक्ति कहाँ गई। असल और चीज है और बात करना और चीज है। मैं खुद गिर जाता हूं। मुझे तो तुम लोगों ने बचाया इस आयु में मेरे सतगुरु आप हैं ! दाता की दया है। जबसे मैंने सुना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होता है तो मुझे यह यकीन हो गया कि जो कूछ भी मेरे अन्दर फुरता है वह है नहीं माया है कल्पित है। किसी वक्त मैं यह ज्ञान भूल जाता हूं तो मैं भी मन के चक्कर में आ जाता हू। यह न कहो कि मैं नहीं आता। इस वास्ते मैं इस परिणाम पर आया हूं कि असली घर जाना जो है या जो शब्द में जावा है यह अपने बस में नहीं है। कोशिश करना

हमारा फर्ज है। मैं यह कहूंगा कि "जिस पर दया आद कर्ता की वह यह नेहमत पाये,, सच्ची बात तो यह है। जब मैं देखता हूं कि मैं खुद गिर जाता हूं तो मैं कैसे आशा करूं कि तुम व गिरोगे। तो मुझे यह समझ में आया कि जिस पर उसकी दया है वह यह नेहमत पाता है। सत्संग शुरू करने से पहले मैंने कहा था कि हम सब लोग मन के चक्कर में आये हुये हैं। पति को पत्नी से नफरत, औरत को पति से नफरत, भाई भाई का दुश्मन, राजा को प्रजा से नफरत, यह जो हमारा ख्याल है इसमें बड़ी ताकत है। तो जब तक इन्सान इस मन के ऊपर नहीं जायेगा, मोक्ष का ख्याल छोड़ दो। दुसरे मन में रहते हुये अगर कोई इन्सान नफरत करता है इर्ष्या रखता है, दुश्मनी रखता है उसको सज़ा मिलेगी बच नहीं सकता चाहे कोई भी हो। फकीर हो, दाता दयाल हों, बाबा सावन सिंह हो, अवतार हों पीर पैगम्बर कोई भी हो बच नहीं सकता। क्या स्वामी जी दो साल बीमार नहीं रहे। क्या बाबा सावन सिंह बीमार नहीं रहे। क्या दाता दयाल की धाम नहीं उजड़ी। तुम लोग ग़लती में हो। गुरु के रूप को नहीं

समझा । गुरु नाम है समझ का, विवेक का, ज्ञान का गुरु की बड़ाई करने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। जो गुरु कहता है । उस पर अमल करो । सोचो मेरी बात को । मैं आपको सत्संग दे रहा हूं ।

मन के नाच सार नाचें, ऋषि मुनि नर देवा ।

आप लोग सत्संग में आये हैं । मैं किसी मिशन को लेकर काम करता हूं । *I have got a certain aim* यह ठीक है कि मेरा मानवता मन्दिर है लेकिन मैं आपकी आंखों में मिट्टी डालना नहीं चाहता कि मेरे प्रशाद से तुम्हारे लड़का हो गया और आपने मुझे रुपये भेज दिये मैं, यह नहीं करता । यह मेरा रूप तुम्हारे अन्तर प्रकट हो गया या मेरे ध्यान से तुम्हारा कोई काम हो गया, इस ख्याल से अगर कोई मुझे पैसा देता है तो मैं नहीं लेता । यह पाप है । मदद के ख्याल से, जैसे Social Service होती है करना चाहो तो मुझे इन्कार नहीं । मैंने कभी यह ख्याल नहीं किया कि किसी बड़े या छोटे आदमी को अपने जाल में फंसा रखूं । तुमको जो कुछ मिलेगा या मिल चुका है या मिलता है यह तुम्हारा अपना

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ही कर्म है, तुम्हारा अपना ही ख्याल है, तुम्हारा अपना ही विश्वास है। लोग मुझ पर विश्वास करते हैं उनको कोई बात कह देता हूं वह पूरी हो जाती है तो क्या उसको मैं करता हूं ? बिल्कुल नहीं, तुम्हारा विश्वास करता है। तो मैं क्या कहना चाहता हूं ? अगर तुम दुनियां से पार जाना चाहते हो तो तुम्हारा मरने से पहले किसी भी स्थूल पदार्थ से मोह नहीं होना चाहिये। अगर बाबे फकीर के साथ भी मोह है तो तुम पार नहीं जा सकते। कोई आदमी कहता है मेरा गुरु फकीर है, कोई कहता है मेरा गुरु सावनसिंह है, कोई कहता है मेरा गुरु दाता दयाल है। तो गुरु के बारे में जो संतों का सिरताज है वह क्या कह गया।

गुरु को मानुष जानते ते नर कहिये अन्ध,
दुःखी होयें संसार में, आगे यम का फद।

जो आदमी अपने गुरु को शरीर धारी मानता है वह कबीर के अनुसार अन्धा है। वह यम के फन्द से निकल नहीं सकता।

गुरु किया है देह को सतगुरु चन्हा नांही,
कहे कबीर ता दास को तीन ताप भरमाहीं।

तो जो मनुष्य फकीर चन्द को गुरु समझता है वह मूर्ख है। अगर तुम वहां नहीं पहुंच सकते तो जिससे तुमने नाम लिया हुआ है उसे शरीर धारी मत समझो गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरु देवमहेश्वर: गुरु साक्षात पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:। गुरु एक Ideal है मेरी कामयाबी का राज़ क्या है? मैंने दाता को इन्सान नहीं समझा मैं उनको राम का अवतार समझता रहा। उन्होंने मेरे ख्याल को गुरुमत की तरफ किया। जब से मैंने तुम लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होता है और मैं नहीं होता तो मेरी आंख खुल गई, अब मैं क्या करता हूं? मेरा ईष्ट है प्रकाश, और शब्द, प्रकाश ही गुरु के चरण हैं। तुम लोग इस ख्याल में मत रहना कि तुमने फकीर चन्द के साथ प्रेम किया हुआ है, मुक्ति मिल जायेगी। झूठ है। मुक्ति तब मिलेगी जो फकीर चन्द कहता है उसको सुन कर समझ कर और उस पर अमल करने से मुक्ति मिलेगी। मैं अपनी आत्मा को साफ रख कर इस संसार से जाना चाहता हूं और अज्ञान में रख कर तुम लोगों को लूटना नहीं चाहता। तुम्हारी इच्छा है मानवता

मन्दिर की सहायता करो या न करो मेरी कोई किताब पड़ो या न पड़ो। यह था पार जाने का मार्ग। अब इस संसार का मार्ग क्या है? इन्सान के ख्याल में बड़ी ताकत है। मैं यह क्यों कहता हूं, लोग मुझ को बना लेते हैं और मेरे से काम ले लेते हैं। मुझे कोई पता नहीं होता। एक लड़का था। वह किसी कलास की साइन्स की परीक्षा देने गया, पर्चा कठिन था, उसने मुझे याद किया मेरा रूप प्रगट हुआ और रूप ने कहा मुझे कोई देख लेगा, मैं बैंच के नीचे बैठ जाता हूं मैं बोलता हूं तुम लिखते चलो। लड़के के १०० में से ९८ नम्बर आये, तो वह कौन प्रगट हुआ? मैं तो गया नहीं, उस लड़के का अपना ही विश्वास था। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं अगर तू दुनियाँ को सच्ची बात नहीं कहेगा तो वह तेरी इज्जत करेंगे और वह इज्जत तुझे खा जायेगी। अगर आज आपको सच्ची बात न बताऊं और अपना मतलब रख कर बात करूं तो जब मैं मरूंगा तो कहां जाऊंगा? मेरा कौई ठिकाना है? मैं डर गया हू। मैंने बाबा सावन सिंह की पिछली ज़िन्दगी देखी है। दाता दयाल की धाम उजड़ गई, Christ के साथ क्या हुआ

कल को मेरे साथ क्या हो कुछ पता नहीं। लेकिन इतनी तो खुशी है कि इस ज़िन्दगी में किसी के साथ धोखा नहीं किया। मैंने तीन पाप किये हैं, छः महिने मांस खाया एक दफा वैश्या के पास गया और तीन बार शराब पी, मैंने और अपनी ज़ात के लिये कभी हेरा फेरी नहीं की। अगर मैं भी नरक में गया तो कोई बात नहीं। दाता दयाल ने हुक्म दिया था चोला छोड़ने से पहले शिक्षा बदल जाना तो मैंने बदल दी कि ए इन्सान अगर तू आवागवन से बचना चाहता है तो इस ज़िन्दगी में रहते हुये तेरा कोई भी मोह किसी भी Gross matter से नहीं होना चाहिये। इसमें गुरु भी आ गया, गुरु का आश्रम भी आ गया! ज़ेवर भी आ गया, औरत भी आ गई, बच्चे भी आ गये, सब आ गये। और अपना ईष्ट प्रकाश और शब्द रख ताके मरते समय तू प्रकाश और शब्द में चला जाये, आवागमन से छूट जाये। अब रह गई दुनियां, यह है ख्याल की दुनियां जब लोग मुझ को बना कर अपना काम पूरा कर लेते हैं तो साबित हुआ कि तुम्हारे ख्याल में बड़ी ताकत है। इस लिये मैं कहता हूं कि घर में शान्ति रखो।

जिस घर में कलह रहती है स्त्री तुरुष की नहीं बनती भाई-भाई की नहीं बनती वहां कभी भी सुख और शान्ति नहीं हो सकती। यह मेरी तालीम का निचोड़ है जो मैंने समझा। शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य रखो। तुम्हारे लड़के हैं, बच्चे हैं, इनको सम्भालना बड़ा मुशकिल है। अपने बच्चों को साफ बता दो ताकि यह ग़लती न करें। बच्चों को सम्भालो। खुद आमल बनो! बच्चों का क्या कसूर है। बच्चे छोटी उमर में खराब हो जाते है इसके हम खुद जिम्मेवार हैं। क्यों? बच्चे पेट में होते हैं, छटा सांतवा महीना, भोग करते रहते हैं। अगर अभिमन्यु माँ के पेट में होते हुए चक्कर व्यूह के अन्दर जाने का संस्कार ले सकता है जब अर्जुन ने अपनी स्त्री को चक्कर व्यूह की कहानी सुनाई थी। जब तक वह जागती रही वह सब कुछ अभिमन्यू के दिमाग में पेट में ही अंकित हो गया। इसी तरह जो गन्दे ख्याल रखते हैं और भोग भोगते हैं तो उसका असर आने वाले बच्चों पर क्यों न पड़ेगा। यह है शिक्षा जो मैं देना चाहता हूं। सरकार ने बहुत कोशिश की कि अच्छे बैल, गाय, भैंस कैसे पैदा किये जायें मगर कहीं है यह तालीम

कि अच्छी सन्तान कैसे पैदा करो। तो दुनियाँ में कामयाबी हासिल करने के लिए क्या चीज़ है। शिव संकल्पम अस्तु:। वेद मार्ग, तुम्हारे दिल में नफरत नहीं चाहिए, द्वेष नहीं होना चाहिए। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुम्हारे घर में अशान्ति रहेगी। अगर अशान्ति रहेगी तो बीमारी भी आयेगी मुसीबत भी आयेगी। मैं कहना नहीं चाहता १९७४ में देहली में दशहरे पर सत्संग दिया था तो मैंने वहां कहा था महात्मा गांधी को गोली क्यों लगी। क्राईस्ट को सूली पर क्यों चढ़ाया गया। तो वहां जै प्रकाश नारायण का भी जिकर आया तो मैंने कहा था कि Jai Prakash Narain will suffer something और आज देख लो जे० पी० बीमार हैं। मेरा ज्ञान ग़लत नहीं है। मेरी औरत थी, देवर ने कुछ कह दिया, जेठ ने कुछ कह दिया सब कुछ दिल में रखती थी, कुढ़ती थी। मैं उसे हंसा करता था कि तुम्हें कष्ट उठाना होगा। पिछली आयु में साढ़े सात साल चारपाई पर बीमार रही। तुम औरतें सतसंग में आई हो! मेरी भी कोई डियूटी है। आपको अपनी अमली जिन्दगी के उदाहरण दे रहा हूं। मैंने एक लड़का

पैदा किया, लड़के के ख्याल से, बाकी मैंने भी ग़लती खाई जैसे आप खाते हैं। लड़का 48 साल का हो गया। आज तक यह मौका नहीं मिला कि उसे कुछ कहूं या थप्पड़ मारूं। वह इतना Obedient है, 2500/- तनखा लेता है। मैं अपनी डियूटी पूरी कर रहा हूं। दुर्गा दास का अहसान मानता हूं इसने मेरी मदद की। मुझे काम करने के लिये Field मिली मैं केवल सेवक हूं। गुरु का हुक्म था, फकीर चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना। मुझे नहीं पता, जो कुछ कहा वह ठीक है या ग़लत! मगर मेरी नीयत साफ है। तुम औरतें अच्छी औलाद पैदा करो और घरों में शान्ति रखा करो! आया शान्ति रखनी या न रखनी अपने बस में है मैं यहां फेल हो गया। मुझे यहां अहूजा साहिब ने बुलाया है। उनसे कहना चाहता हूं प्यारे मित्र, लड़का और लड़की जो कुछ भी है इस दुनियां में केवल अपने अपने कर्म भोगने के लिये आते हैं। हर मनुष्य अपने कर्म लेकर आता है। आपकी यह डियूटी है कि जो सेवा कर सकते हो करो! चिन्ता नहीं करनी चाहिये हम यूं ही चिन्ता करते हैं और फिर कमजोर दिल हो जाते हैं।

तो या तो हमें डाक्टर लूटते हैं या मेरे जैसे महात्मा तुम लोगों को लूटते हैं। आपको सुमिरन ध्यान दिया जाता है। क्यों दिया जाता है ? तुम लोगों को पता नहीं। जब तुम्हारा मन कोई गन्दा ख्याल उठाये तो फौरन सुमिरन और गुरु का ध्यान करो। एक आदमी आध घन्टा या घन्टा प्रात: अभ्यास करता है और सारा दिन अपने मन को Watch नहीं करता कि उसका मन क्या सोचता है तो उस अभ्यास का कोई लाभ नहीं। हमेशा अपने मन के ऊपर नजर रखो। हम क्या 2 सोचते हैं। जहां मन कोई गन्दा ख्याल उठाये जो नहीं चाहिये, उसे सुमिरन से दूर करो या ध्यान से दूर करो या ज्ञान से दूर करो। मैं अपनी बाबत जानता हूं मैंने बग़दाद में दो तम्बूरे मत्थे से मार कर तोड़े थे। करता भजन था मन कहीं और जगह चला जाता था। यह मन बहुत चंचल है तुमको यह पता नहीं। मैं भी अधिक बातें करता हूं। कभी 2 यह मुझे भी मार देता है। मगर मुझे तो आप लोगों से पता लगा। जब से पता लगा कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता, तो मुझे पता लग गया कि मन के अन्दर

जितने ख्याल आते हैं यह केवल माया है और कुछ नहीं है। मैं ध्यान नहीं देता, इस मन के साथ झूझना आसान काम नहीं है, इसका इलाज क्या है? इस का इलाज है सतसंग तुम जिसका ध्यान करते हो, जैसा तुम इसको समझते हो, जैसा वह है, उस का असर तुम पर आयेगा, मैं अगर महात्मा बन कर, सच्ची बात तुमको नहीं बताता और मंदिर के लिये पैसा इकट्ठा करने के लिये आप को यदि रोचक और भयानक बातें कहूं, तो जब तुम मेरा ध्यान करोगे तो तुम गंदे बनोगे क्योंकि मैं खुद गंदा हूं। इन्सान का शरीर रेडियो स्टेशन है। इस में से जैसे तुम हो वैसे ख्यालात निकलते रहते हैं। घर में एक औरत है वह कुढती रहती है, तुम उस कमरे में जाओ डर जाओगे, कुदरती बात है, ख्याल में बड़ी ताकत है। जो कुछ है यह संकल्पमय दुनियां है। इस मन को काबू करना आसान काम नहीं, इस का इलाज सतसंग है। वह भी किसी निरबन्ध पुरुष का सतसंग हो। ग़लत आदमी का सतसंग नहीं होना चाहिये। यह जरूरी नहीं उसको तुम गुरु मानों, भाई, दोस्त, बाप कुछ मान लो। अच्छी बात तो

यह है कि सुबह शाम अपने 2 मजहब के अनुसार जैसे तुम को संस्कार मिले हुए हैं बच्चों को बैठा कर सतसंग किया करो।

साधो यह मन है बड़ जालिम,
जा को सब से काम परो है, तिस ही ह्वै हे मालुम।
मन कारन जो छाया, तेही छाया में अटके,
निरगुन सरगुन मन की बाजी, खरे सयाने भटके।
मन ही चौदह लोक बनाया, पांच तत्त गुन कीन्हे,
तीन लोक जीवन बस किन्हे, परै न काहू चीन्हे।
जो कोउ कहै हम मन को मारा, जा के रूप न रेखा,
छिन-छिन में कितनौ रंग ल्यावै, जे सपनेहु नहीं देखा।
रसातल इकइस ब्रह्मांडा, सब पर अदल चलावै,
षट रस में भोगा मन राजा, सो कैसे कै पावै।
सब के ऊपर नाम निहच्छर, तंह लै मन को राखै,
तब मन की गति जान परै यह, सत कबीर मुख भाखै।

तुम्हारे अन्दर आज बाबा फकार प्रगट हुआ, मैं तो गया नहीं, तुम्हारा मन ही है तुम भूल में हो। इस दशा को देख कर कुदरत ने मेरे दिमाग़ को हिलाया, मेरे ग्रह ऐसे ही हैं, मैं आया ही इसी लिये हूं अतामी धाम से अवतार लेकर कि संत मत को

साफ कर जाऊं। तुम्हारे अन्दर बाबा सावन सिंह प्रगट हुए वह तुम्हारा मन है, तुम को पता नहीं तुम उस में फंस जाते हो। सारी दुनियाँ रूपों में फंस कर मर गई। सारी आयु बेशक स्वामी जी महाराज का ध्यान करते २ मर जाओ तुम्हारा आवागवन नहीं छूटेगा, मैंने सब प्रमाण दे दिये, कोई कसर नहीं छोड़ी, अमल करना तुम्हारा काम है, मेरे जिम्मे डयुटी है।

तेरा रूप है अदभुत अचरज, तेरी उत्तम देही,
जग कल्यान जगत में आया, परम दयाल सनेही।

कई बार सोचता हूं तू क्या कर सकता है, मैं सच्चा ज्ञान दिये जाता हू कि ऐ मानव जाती, बाहर से कोई राम कृष्ण, मुहम्मद, गुरु या Christ नहीं आता, तुम क्यों भूल में पड़े हो। हिंद समाचार में मैंने एक Article पढ़ा, Christ कहता था मैं ऊपर का बादशाह हूं तो उसके दुशमनों ने उसे पकड़ लिया, उसकी आंखों पर पट्टी बांध दी, एक को कहा मारो इसके मुंह पर थप्पड़, और उससे पूछा कि किस ने थप्पड़ मारा, वह पहचान न सका, अगर

वह पहचान लेता तो उस की गड्डी चढ़ जाती। तुम सब भूल में हो, तुम्हारा बेड़ा किसी ने पार नहीं करना, तुमको गुरु की बाणी ने, उसकी समझ ने और अमल ने पार करना है। तुमको राम ने, फकीर ने, या बाबा सावन सिंह ने पार नहीं करना। मैं यह क्यों कहता हूं मुझे हजारों आदमी गुरु मानते हैं मेरी साफ ब्यानी से मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। तुम अपने अज्ञान से अगर मुझे गुरु मानते रहो तो मानते रहो, मुझे कोई पाप नहीं। फकीर चन्द को पूजने से तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। फकीर चन्द की बात को समझ कर उसपर अमल करके तुम्हारा बेड़ा पार होगा। जब से मैंने सुना कि तुम्हारे अन्दर मेरा रूप प्रगट होता है और मैं नहीं होता, इससे मुझे मन के रूप का पता लग गया। अब मैं मन में फंसता नहीं। अगर ज्ञान को भूल जाता हूं तो मैं भी मन के चक्कर में आ जाता हूं। इसलिये मैं अपने चेलों को सच्चा सतगुरु समझ कर मत्था टेकता हूं। क्योंकि आप लोगों से मुझे यह ज्ञान मिला। बात मेरी समझ में आ गई। हम गृहस्थियों को बुरी तरह लूटा गया है। हमारी आंखों

में मट्टी डाल कर इन सब मज़हब वालों ने अपना उल्लू सीधा किया है। इन्होंने हमें सच्ची बात नहीं बताई। मैं अगर पर्दा रखता तो तुम लोगों को लूट कर खा जाता। मैं सोचता हूं बात क्या है? अगर कोई मेरी बात कही हुई पूरी होती है तो उसका यह मतलब नहीं कि मैं कुछ करता हूं या मेरे में कोई ताकत है। मेरा अन्दर बाहर एक है। जो होने वाली बात होती है वह मेरे मुंह से निकल जाती है। मुझे गुरुवाई नहीं चाहिए। मैं तो अपनी डियूटी पूरा किये जा रहा हूं तुमको जो मिलना है वह तुम्हारे कर्म का फल मिलना है। मुझे तो मन की फिल्म से तुम लोगों ने छुड़ाया है। अब मैं तुम लोगों को इससे छुड़ाना चाहता हूं। मगर तुम मेरी सच्ची बात सुनने के लिये तैयार नहीं हो। यह सब तुम्हारे अपने ही मन का चक्कर है। मैंने यह काम बड़ा दर्द रखकर किया है। गीता को पढ़ो, भागवत को पढ़ो, सब पांडव अर्जुन समेत नरक में गये। तो जिस अर्जुन ने १८ अध्याय, कृष्ण के मुंह से सुने, वह भी नरक में गया। मेरे दाता ने कह दिया कि—"आजा शरण बचा लूंगा" राधास्वामी दयाल ने कह दिया—"यह

करनी मैं आप कराऊं, पहुचाऊं धुर दरबारा" ऐसी २ बातों को सुन कर आदमी कहां जाये, किसको पूछें ? इसलिये मैं कहता हूं कि ऐ इन्सान, गुरु ने तुझको ज्ञान देना है, बेड़ा पार तेरे अमल ने करना है। जो कुछ मैंने कहा, वही दाता दयाल ने कहा। मैं संत मत से बाहर नहीं जाता। दाता दयाल का शब्द है।

गुरु रूप न समझे कोई, भरम में पड़े अज्ञानी।

तो जब मैं इसको नहीं समझता था, तो मुझे दाता कहते थे, "तेरे घट में माल खज़ाना हाये फकीरवा"। मेरे कहने का भाव यह है कि जिस गुरु से तुमने नाम लिया हुआ है, उस गुरु को यह मत समझो कि वह बाबा फकीर है या बाबा सावन सिंह है। उसको पूर्ण मानों। जब तुम उसको ऐसा समझोगे, तुम्हारे अपने ही विश्वास से तुम्हारा काम बनेगा। एक औरत है, लड़का उसको अपने भाव से देखता है, पति अपने भाव से देखता है, भाई और भाव से देखता है, तो ऐसे ही जितना खेल है यह तुम्हारे अपने ही मन का है। मेरा यह मतलब नहीं कि तुम अपने गुरुओं को छोड़ दो। गुरु को मानुष

मत मानो। उसको पूर्ण मानों और अपने अन्तर उसका ध्यान करो। तुम्हारे सब काम होते रहेंगे। गुरु अगर दस नम्बर का बदमाश भी है तुम्हारे काम फिर भी हो जायेंगे। हां तुमको ज्ञान नहीं मिलेगा। जितना खेल है यह सब अपने विश्वास का है। कल अभ्यास के बारे में कहूंगा। जो अभ्यासी हैं आ सकते हैं? अभ्यास आसान है। समझाने वाले को पता नहीं। लोग किताबों का हवाला देते हैं। मैं अपना तजुर्बा कहता हूं। हर व्यक्ति की प्रकृति अलग २ हो ध्येय एक है, रास्ते अलग २ हो सकते हैं। गुरु अपने जाल से निकलने नहीं देते। तुम आज दान देते हो कि इसका फल तुमको मिले। जब मर जाओगे दान का फल लेने के लिए दूसरा जन्म लेना पड़ेगा। इस वास्ते जो काम करो निष्काम करो। निष्काम काम की मिसाल देता हूं। मुझे ३७ वर्ष हो गये इस काम को करते, मुझे कभी मानवता मन्दिर स्वप्न में नहीं आया। दुर्गादास, मामचन्द, नारायन-दास, गोपाल दास कभी स्वप्न में नहीं आये। यह मेरी कितनी सेवा करते हैं। मगर रेलगाड़ी, माता जी, मेरे पिता जो और मेरी धर्म पत्नी

अब भी कभी २ स्वप्न में आते रहते हैं। तो ऐसा क्यों ? वह जो मेरा काम था वह गरज़ के लिये था। वह संस्कार जो मेरे दिमाग़ में बैठे हुये हैं अभी समाप्त नहीं हुये। मुझे स्वयं पता नहीं कि अंत समय मेरा क्या हाल होगा। मरते समय अगर मैं स्वप्न में चला गया तो 'अंत मता सो गता' के अनुसार कहीं स्टेशन मास्टर बनूंगा। इसलिये जो काम तुम करते हो अगर वह निष्काम है तो उसका असर तुम्हारे दिमाग़ पर नहीं पड़ेगा। यह मेरे तजुर्बे की बातें हैं। मैंने तीन खत रजिस्टरी करके बाबा सावनसिंह जी को लिखे कि मुझे स्वप्न आते हैं। क्या आपको भी आते हैं ? उनका कोई जवाब नहीं आया। कोई महात्मा अपनी रहनी को नहीं बताता। मैं बताता हू। मैं २६साल अपनी औरत की अन्तिम आयु मैं अलग रहा। वह मरने के डेढ़ साल बाद मेरे सपने में आई। उसने कहा तुमने मेरे साथ धोखा किया है। मैं कामातुर हुआ और गिरा। मन पर जो संस्कार पड़े हुये हैं, इनको खतम करना आसान काम नहीं है। मैंने जो काम अपने निज स्वार्थ के लिए किया हुआ है उसका संस्कार मेरे दिमाग़ से नहीं जाता। हम

जितना भी दुनियां में काम करते हैं यह सकाम है, यह हमारे कर्म बन जाते हैं, दूसरे जन्म में भोगने पड़ते है। इसलिये कहा जाता है निष्काम काम करो। मेरा यह काम भी निष्काम नहीं है। मैं रोता हूं। अगर मैंने मन्दिर न बनाया होता तो आज पैसा लेने के लिये तुम लोगों के घर २ न जाता। *I feel my weakness*· कर्म का चक्कर है। बगैर सैन्टर के काम नहीं चलता था। सरकारी कानून के अनुसार जो रुपया हम साल में इकट्ठा करते हैं उसको खर्च करने के लिए हस्पताल खोलने पड़े। और वहां अगर ग़रीब इलाज के लिए आते तो मुझे कोई दुःख न होता। मगर वहां तो कारों, स्कूटरों वाले अमीर आते हैं मुफ्त इलाज के लिये *I dont think my life is good*, मगर मेरे जिम्मे डियूटी थी। ए दाता! आपने हुक्म दिया मैंने कर दिया, ग़लती है तो मुझे क्षमा करना। मैंने तत्व विचार जो समझा संसार को बता दिया। आप ध्यान करते हैं। प्रकट रूप में तो भगवान की पूजा करते हैं मगर अन्दर में क्या गर्ज़ होती है? हमारा यह काम हो जाये, वह काम हो जाये। जो गुरु सच्ची बात नहीं बताता,

वह जहर खाता है। मैं साफ कहता हूं। अगर कोई समझता है कि मैं ग़लती पर हूं तो वह मेरे सामने आये और मेरा खंडन करे।

साधो भजन भेद है न्यारा।

इन गुरुओं ने चेलों के कानों में फूंक मार कर अपने सिर पर बोझ लिया। मैंने बोझ नहीं लिया। मैंने चेले नहीं बनाये। बात कहता हूं। जो मेरी बात को मान जाता है, उसका काम बन जाता है। कबीर का कहना है कि सच्चे ज्ञान के बगैर सारे के सारे वह गये, किसके लिये? लोभ के लिये, मानवता मन्दिर के लिये। *I want to keep my conscienee clear* यह सच्ची बात क्यों नहीं बताते। इसलिये नहीं बताते कि पैसा नहीं आता, चेले नहीं आते। मेरे पास कौन आता है? सिर्फ कुछ समझदार आदमी मेरी कदर करते हैं। देखो जो मैंने समझा है, हम सब मालिक का याद करते हैं, जो असली मालिक है वह यहां नहीं रहता। असली मालिक तो वह है जिसमें से शब्द और प्रकाश निकलता है। वह ऊपर है। जिस तरह सूरज यहां वहीं रहता, सूरज की किरणें रहती हैं। अगर सूरज यहां आ जाये, तो

हम सब जल जायें। ऐसे हो अगर मालिक यहाँ आ जाये तो यहाँ सब Oneness हो जाये। मालिक की अंश यहां रहती है। वह है सुरत। हर जीव के अन्दर मालिक की अंश है। इस लिये जो मालिक की भक्ति करना चाहे वह क्या करे? इन्सान इन्सान की सेवा करे। यह है असली भक्ति सच्चे मालिक की। मगर एक इन्सान सब इन्सानों की सेवा तो नहीं कर सकता। जिनको कुदरत ने तुम्हारे साथ लगाया है, उनकी सेवा करो। तुम्हारे मां बाप हैं, बच्चे हैं, भाई हैं, रिश्तेदार हैं, उनकी सेवा करो। तब तुम सच्चे मालिक के सेवादार बनोगे। यह है असली सेवा जो मैं इस आयु में खुदा की सेवा समझता हूं। अब मुझे समझ आई कि परम-तत्व है क्या चीज। मैंने भी बड़ी सेवा की है। नाम है अनुभव और ज्ञान।

सुरत शब्द दोऊ अनुभव रूपा,
तू तो पड़ा भरम के कूपा।

तो जब इन्सान के अन्दर बीन बजने लग जाये, अकाश हो जाये, तब गुरु की तलाश करो! यही

दाता दयाल जी ने लिखा है। फिर तलाश के वादे क्या हो जाता है, मुझे पता नहीं। मेरे साथ क्या हुआ ?

माला फेरू न हर भजूं, मुख से कहूं न राम,
मेरा राम मुझे जपे, तब पाऊं विश्राम।

फिर यह हो जाता है। फिर वह न खुदा बनता है, न ब्रह्म बनता है। वह ऐसी अवस्था हो जाती है जिसे कहते हैं सहज वृति। उसको फिर कुछ करने, धरने की जरूरत बाकी नहीं रह जाती।

सब को राधास्वामी !

सत्संग परम दयाल जी महाराज

सेठ दुर्गादास जी के मकान नं० २ सेक्टर 19—ए
चण्डीगढ़ पर तिथि 29-5-77

राधास्वामी। मैंने कल आप लोगों को बताया था कि पंथ में सबका खंडन था। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। जो कुछ करता हूं यह मेरा कर्म भोग है मेरा किसी पर एहसान नहीं। दाता दयाल जी ने कहा था चोला छोड़ने से पहले तालीम बदल जाना। जब १९०५ में मुझ को दृश्य आया तो मैं दाता दयाल के रूप को राम का अवतार समझता रहा। दस महीने पत्र लिखता रहा, एक पत्र हर हफ्ते। तो दस महीने के बाद उन्होंने जवाब दिया कि मैंने हकीकत, असलीयत, सच्चाई और शान्ति हज़ूर महाराज राय साहिब सालिग राम जो से संतमत के सिलसिले में हासिल की है। तुमको अगर इस रास्ते पर चलने में कोई इन्कार न हो तो लाहौर आ कर मिल सकते हो।

आज मैं अपने कर्म भोगवश यह कहना चाहता हूं कि मैंने असलीयत हकीकत और सच्चाई क्या समझी और मुझे शान्ति कैसे मिली। आप सुनें, समझें, अमल करें या न करें, मैं इसका ठेकेदार नहीं। पहले असलीयत और हकीकत क्या है कि हम कौन हैं। हम ईश्वर की तलाश करते हैं। मगर हमें यह पता नहीं कि हम हैं कौन। मैं इसका जवाब मज़हबी दुनियां का जवाब नहीं देता। मैं मां के पेट से आया, तुम सब अपनी-अपनी मां के पेट से आये हो। माँ के पेट में बाप के वीर्य का नज़र न आने वाला कीड़ा आज पाँच छः फुट का जवान बना हुआ है। कितनी बातें करता है? वह जो कीड़ा है वह हमारा आद है। वह कीड़ा कैसे बना? किस तरह से बना? बाप ने जो अन्न खाया उसका खून बना, फिर उससे वीर्य बना। उस वीर्य में वह कीड़ा पैदा हुआ। खून कैसे बना? जब तक बाप अन्न न खायें कीड़ा नहीं बन सकता। अन्न किस से बनता है? पृथ्वी से कोई चीज़ नहीं बन सकती जब तक इसमें सूरज की किरणें न आयें, सितारों की किरणें न आयें, कोई खाद्य पदार्थ नहीं बन सकता।

तो हमारे इस शरीर का (*Origin*) आद (*Light*) प्रकाश हुआ, और रोशनी ही अन्तिम गति है। इस शरीर का जो आद है वह है नूर। तो हकीकत क्या हुई। शारीरिक रूप से हम कौन है ? हम नूर हैं। अगर कोई इन्सान आद घर जाना चाहता है तो वह क्या करे ? अपने आप को एकाग्र करके उस प्रकाश में अपने अन्तर में चला जाये। क्योंकि शरीर के बनने से पहले जो प्रकाश स्वरूप था उसमें न सुख था, न दुख था, न उसमें 'मैं' थी न 'तू' थी। इस वास्ते सन्तों ने आद घर पहुंचने के लिए क्या बताया है ? शास्त्रों ने क्या बताया है ? गायत्री मंत्र के द्वारा अपने अन्तर ज्योति स्वरूप के दर्शन करो। रोशनी को देखो। यही मार्ग सन्तों का है। जब इन्सान प्रकाश में चला जाता है तो जिस तरह से हमारे शरीर का आद प्रकाश स्वरूप था उस समय हमें कोई दुख नहीं था। जब हम प्रकाश स्वरूप बनेगें तो हमें दुख नहीं होना चाहिये। जो आदमी प्रकाश का साधन करता है वह अपने आप को शारीरिक और मानसिक दुःखों और सुखों के बोध भानों से बचा सकता है। तो कोई आदमी इस दुनियां

में आकर के अगर यह चाहता है कि शरीर के दुःखों से हमेशा के लिये बच जाये तो उसके लिये क्या इलाज है? वह अपने अन्दर प्रकाश का साधन करे। मगर हम क्या करते हैं? हम अन्दर में गुरु से बातें करते रहते हैं, हमारे अन्दर राम बोलता है, हमारे अन्दर देवी प्रकट होती है, हमारे अन्दर बाबा फकीर प्रगट होता है। तो जितने यह सूक्ष्म देश के रंग रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होते हैं यह सब माया है। इसमें हकीकत नहीं है। जो अभ्यास करते हैं उनको मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर तुम अपने आद घर जाने के ख्याल से अभ्यास करते हो तो जो रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होते हैं उनसे बातें न किया करो। वह बातें जो तुम करोगे ग़लत भी हो सकती हैं ठीक भी हो सकती हैं। वह बातें क्या होती हैं? जिस प्रकार के विचार संस्कार तुम्हारे मन पटल पर पड़े होते हैं उन संस्कारों के अनुसार तुम्हारे अन्दर रूप नज़र आते हैं। कोई कहता है मेरे अन्दर राम आ गया, कृष्ण आ गया, मुहम्मद आ गया, नानक साहिब आ गये, बाबा

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

सावन सिंह आ गये फकीर आ गया, ऐ इन्सान बाहर से कोई नहीं आता है। वह क्या हैं ? जो संस्कार तुममें पढ़ने से, सुनने से, देखने से, प्रालब्द कर्मों के अनुसार पड़े हुये होते हैं। वह सामने आते हैं। क्योंकि लोगों को असलीयत का पता नहीं है वह इस मन के चक्कर में आकर दीवाने हो जाते हैं और कई ग़लत रास्ते अपना लेते हैं। इस लिये बार २ कहा जाता है कि किसी कामल पुरुष की सोहबत में रहो। वरना तुम नुकसान उठाओगे। तो असलीयत क्या हुई ? हमारा जो आद है, हमारा जो शारीरिक और मानसिक ढांचा है यह कब बनता है ? जब बाहर की शक्ति स्थूल पदार्थ में आती है तो इसके अन्दर मन, चित्त, बुद्ध, और अहंकार पैदा होते हैं। जिस तरह सूरज की किरणें जब ज़मीन पर पड़ती हैं वहां तरी होती तो बीज अंरवुआ देता है। उसके अन्दर फूल पत्ते निकलते हैं। ऐसे ही जब यह प्रकाश रूपो आत्मा हमारे अन्दर आता है तो जिस प्रकार की जिसकी प्रकृति होती है उस प्रकार के भाव विचार उस आदमी के पैदा होते हैं। अब सच्चाई है क्या ? हमारे शारीरिक और मानसिक

ढांचे का आदि क्या है ? वह है प्रकाश, इसी को ब्रह्म बोलते हैं। जिस वक्त तुम्हारे अन्दर फुरना फुरती है, तुम्हारी फुरना मे सूक्षम प्रकृति होती है, वह ताकत रखती है, उसमें शक्ति है। जिस तरह बाहर के सूरज की किरणें ज़मीन पर पड़ती हैं तो बीज में जो कुछ होता है फूलता, फलता है, ऐसे ही जिस प्रकार के ग्रहों के प्रभाव से जिन सितारों की किरणों से तुम्हारा शरीर बना हुआ है वह तुम्हारे अन्दर फैलेगा। उसमें ताकत है। उस ताकत को बढाने के लिये क्या करना चाहिये ? मन को एकाग्र करो। जो आदमी अपने मन को एकाग्र कर सकता है उसका मनोबल बढ़ जाता है। जो कुछ वह सोचता है, इच्छा करता है वह उसके मनोबल के अनुसार पूरा हो जाता है। यह मैं क्यों कहता हूं। लोग अपने विश्वास से मेरे रूप को बना लेते हैं और ख्याल के अनुसार मेरे रूप से काम ले लेते हैं। किसी को मेरा रूप दवाई बता देता है। एक आदमी कुछ दिन हुये मिला था। वह कहता है बाबा, मैं तो दवाई करता नहीं हूं। क्या करता हूं ? जब मैं बीमार होता हूं तो आपको याद करता हूं, आप आ

जाते हैं। मुझे दवाई बता देते हैं मैं बाजार से दवाई ले आता हूं, ठीक हो जाता हूं और मुझे कोई पता नहीं होता। अगर मैं ऐसे ही इलाज करने वाला होता तो मैं चण्डीगढ़ P.G.I में Check कराने क्यों आता। यह क्या रहस्य है? तुम गृहस्थी हो। तुम लोगों के लिये दिल में सच्ची हमदर्दी रख कर भाषण देता हूं ताके तुम लोग भटक न जाओ। इन मजहबों ने, इन पंथों ने, हम को सच्चाई न बता कर के अपने जाल में फंसा करके बुरी तरह लूटा है। अब मुझे तो पता नहीं, आप ने लिखा है कि हैदराबाद में आपने मेरा दर्शन किया। मैं शपथ पूर्वक कहता हूं कि मैं हैदराबाद नहीं गया। फिर कौन गया? ऐ दीवाने इन्सान! हम लोगों को मूर्ख बनाया गया। जब आपने लिखा कि आपने मेरे दर्शन हैदराबाद मे किये तो क्या मैं सत्य प्रिय होने के नाते अपने आपसे पूछने के लिये विवश नहीं हूं कि क्या मैं गया था? मैं नहीं गया। वह कौन प्रकट हुआ? वह तेरी अपनी ही आत्मा है। जिस प्रकार का संस्कार, ख्याल, किसी के दिमाग़ में पड़ा हुआ होता है वह समय आने पर फुरता है। इसी अज्ञान की

वजह से कहीं मन्दिर बन गये, कहीं गुरद्वारे बन गये, कहीं डेरे बन गये, मसजिद और गिरजाघर बन गये, यह है क्या।

जग में घोर अन्धेरा भारी।
तन में तम का भण्डारा।
जाग्रत स्वप्न दोनों देखी।
भल भुलैयां धर मारा।

तो असलीयत क्या है? तुम सोचो कि कभी सपने में किसी स्त्री ने यह देखा कि वह पुरुष है, क्या किसी पुरुष ने यह सपना देखा है कि वह स्त्री बन गया हो या विवाह किया है बच्चे पैदा किये हैं? क्यों नहीं। क्योंकि इस बात का ऐसा संस्कार उनके दिमाग़ पर है नहीं। तो तुम जो कुछ भी देखते हो सपने में या अभ्यास में, यह सब वह देखते हो जिसका संस्कार तुम्हारे अन्दर है। क्या किसी मुसलमान के अन्दर राम प्रकट हुआ या किसी हिन्दु के अन्दर कभी मुहम्मद प्रकट हुये? क्यों नहीं प्रकट हुये? क्योंकि उनके नक्शे का संस्कार उनके दिमाग़ पर नहीं पड़ा हुआ। मैं आज हक़ीकत, असलीयत और सच्चाई ब्यान किये

जाता हूं कि ऐ मानव जाती ! जो कुछ है तेरे मन का संस्कार है । तेरे ही मन का ख्याल है । जैसा तेरा ख्याल है वैसा तेरा हाल है, जैसी तेरी मती है, वैसी तेरी गती है, जैसी तेरी करनी है वैसी तेरी भरनी है। ऐ इन्सान ! तू अपनी किसमत का आप मालिक है । जो कुछ तुमने सोचा हुआ है, पिछले जन्म का या इस जन्मका वह तेरे सामने आयेगा । अच्छा किया हुआ है तो अच्छा आयेगा, बुरा किया हुआ है तो बुरा आयेगा । नेकी की हुई है तो नेकी आयेगी, बदी की हुई है तो बदी आयेगी अब तुम देखो, हम गुरुओं ने क्या किया ? तुम्हारे अन्दर रूप प्रकट हुआ अगर काम बन गया तो लाऊड स्पीकर आगे रख दिया सुनो भई ! यह क्या कहता है और अगर काम नहीं बना तो कह दिया तेरे अन्दर जो रूप प्रकट हुआ था वह काल का रूप था, दयाल का नहीं था । ऐसी रोचक और भयानक बातें कह कर के हम गृहस्थियों को इन मजहब वालों ने लूटा है । मैं अगर ग़लत कहता हूं तो मौजूदा महात्मा मेरे सामने आयें और कहें कि मैं ग़लत कहता हूं । मेरे सामने सब मानते हैं ।

संत चरण सिंह ने माना, सन्त कृपाल सिंह ने माना नन्दू भाई ने माना कि वह खुद कहीं नहीं जाते हैं मगर पब्लिक को कोई नहीं बताता। क्योंकि पब्लिक को बता देने से झूठा मान और पैसा नहीं आता। मैं आया हूं अवतार लेकर अनामी धाम से, यह कहने के लिए कि ऐ इन्सान ! हकीकत और असलीयत यह है कि अगर तुम दुनियां में सुखी रहना चाहते हो तो अपने ख्याल को ठीक करो। तुम्हारे ख्याल में ताकत है। एक जगह विश्वास रखो। मैं नहीं कहता कि तुम मुझको गुरु मानो। गुरु नाम है "ज्ञान" का। ज्ञान तो मैं दिये जाता हूं। जिस रूप में तुम विश्वास रखते हो, उस रूप को पूर्ण मानों और हमेशा अपने पास समझो। जो यह समझते हैं कि उनका गुरु होशियारपुर रहता है वह ग़लती पर हैं। गुरु हर समय तुम्हारे पास रहता है। तुम्हारा अपना ही आप है। तुम भूल में हो। टक्करें मारते फिरते हो। यही दाता मुझे फरमाया करते थे कि फकीरा गुरु तो तेर पास है। तेरे तन में, तेरे मन में है"। मगर मुझे समझ नहीं आती थी। मैंने दाता दयाल को राम समझ कर पूजा है। सोने का ताज बनाता था,

चांदी के हुक्के बनाता था ज़री के कपड़े बनाता था। मेरा विश्वास था मगर वह कहते थे कि तुम गलती पर हो। वह मुझे लिखते थे।

काहे बौराना हाय फकीरवा,
तेरे घट में माल रवज़ान, भया दिवाना हाय फकीरवा।
जाको चाह में खोजत डोले, मन में समाना हाय फकीरवा।
तीरथ बरत सभी तेरे भीतर, नहीं कहीं जाना हाय फकीरवा।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, नित गुन गाना हाय फकीरवा।

हाय उस समय कहा जाता है जब कोई मर जाये या बड़ा भारी अकाज हो जाता है। तो मेरी हालत को देख कर दाता ने हाय कहा। मैं राम समझ कर उनको पूजता था। तो वह कितने दुख से मुझे यह कहते थे। मेरे उस प्रेम को, उस अज्ञान को, हाये के शब्द से प्रगट करते थे मगर मेरी खोपड़ी में नहीं आता था। मुझे यह समझ देने के लिये यह काम दिया था और कहा था फकीर! तुझे सच्चा सत्गुरु सत्संगियों के रूप में मिलेगा। जिन लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ और मेरे रूप ने उनकी मदद

की उन्होंने मुझे बताया तो मुझे ज्ञान हुआ *S. P. Sahib, I want to open your eyes.* तब मेरी आंख खुली कि मैंने जो कुछ किया ग़लत किया। आप लोग आये हैं। मैं किसी मकसद से यहाँ आया हूं। यह न समझो कि मैं यहां बिना किसी प्रयोजन के यहां आया हूं। एक यह भी प्रयोजन है कि मन्दिर के लिये ले जाऊंगा। दूसरे यह लोग पुराने २ जो मुझ से प्रेम करते हैं अगर आप लोगों को सच्चाई व्यान नहीं करता तो मैं दोषी हूं। जितने महात्मा गुज़रे हैं जिन्होंने तुम्हारे साथ सच्चाई का व्यवहार नहीं किया यह सब दोषी हैं। मैं खुले आम कहता हू हमको मूर्ख क्यों बनाया गया ? अपने डेरे, अपने धाम, अपने मान, अपनी इज्जत, अपनी दौलत को कायम रखने के लिये सच्चाई नहीं बताई। आप *S. P.* हैं। आप ने लिखा है हैदराबाद में आपने मेरे दर्शन किये तो मैं तो था नहीं। किस के दर्शन किये ?

आप का अपना ही आत्मा। ए इन्सान ! तू भूला हुआ है। तेरा मन ही गुरु है, तेरा मन ही

चेला है, तुझको पता नहीं। मुझे खुद पता नहीं था। मूर्ख हैं वह जो गुरु के चरण यह समझते हैं। अरे, गुरु के चरण प्रकाश हैं तुम्हारे अन्दर। यही हजूर राय सालिग राम साहिब ने लिखा है। गुरु शब्द स्वरूप है उनके चरण प्रकाश है। सारी आयु तुम इन चरणों को धो कर पीते रहोगे क्या मिलेगा तुमको ? एक जज्बा है। गुरु के चरण प्रकाश है। प्रकाश ही सनातन धर्म का मजहब है। दुनियां समझती नहीं। मेरे चरणों को क्या करोगे। मैं गुरु की तलाश में निकला था। पहले मेरे अन्दर गुरु का रूप नजर आता था तो मैं समझता था कि दाता दयाल मेरे अन्दर आ गये। जब तुमने कहा मैं तुम्हारे अन्दर प्रकट होना हू और मैं नहीं होता तो जो दाता मेरे अन्दर प्रकट हुआ वह गुरु तो न हुआ। तो वह गुरु कौन है जो मेरे अन्दर आया ? यह तो मुझे विश्वास हो गया कि बाहर से दाता दयाल नहीं आते। कौन आता है ? तुम्हारा अपना ही आत्मा होता है। तो गुरु तुम्हारे अन्दर कौन है ? तुम्हारी आत्मा। ए भूले हुये इन्सान ! मैं तेरे लिये आया हूं। तुमको इन मजहब वालों ने मूर्ख बना कर लूटा है। मैं तुमको

सच्चाई ब्यान करता हूं। किस गुरु की तलाश के लिये होशियारपुर ब्यास, आगरा, हरिद्वार जाता है। वह तेरा अपना ही मन है। तुम भूले हुये हो। क्यों भूले हुये हो ? तुमको दुनियां की आशायें हैं। तुमको दुनियां चाहिये। दुनियां में तुमको जो कुछ मिलता है यह तुम्हारा अपना कर्म है। मैं तुम लोगों के लिये यहाँ आया हूं ताकि गुरु बनने का मुझ पर कोई पाप न रहे। अगर मैं तुमको सच्चाई ब्यान नहीं करता, तुमको अन्धेरे में रखता हूं मैं दोषी हूं। यह सब आज कल के गुरु जो सच्चाई नहीं बताते यह सब दोषी हैं।

They are not true to themselves. They have decieved us. They have cheated us. They have given us a wrong idea.

मगर वह भी सच्चे हैं। तुम सच्चाई के लिए नहीं आते हो तुम तो आते हो बेटे के लिये, भाई के लिये, पोते के लिये। अरोग्य बनने के लिये। अरे, यह जो कुछ मिलता है यह तुम्हारा कर्म है इसके लिये तुमको एक बात बता देता हूं वह यह कि ध्यान करो। मैं नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो जहाँ

जहाँ तुम्हारा विश्वास है वहां करो। जब तुम ध्यान करोगे तुम्हारा मनोबल बढ़ जायेगा और जो तुम्हारे निष्क्रिय मन में चाह है वह पूरी होगी। यह मैं क्यों कहता हूं ? लोग जिनको मैं जानता नहीं वह मेरा ध्यान करते हैं उनके अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है, जो उनकी इच्छा होती है पूरी हो जाती है और *Credit Hisholines Pt. Faquir Chand* को देते हैं। सोचो मेरी बात को ! मैंने आप लोगों के घरों की रोटी खाई है, कुदरत ने मुझे ऐसे ही बनाया है, मगर मैं सच्चा हूं तुम घरों में कुत्ता पालते हो जब कोई खतरा होता है तो वह भौंकता है तुमको खबर दार करता है, कई तो डांग मार देते हैं कि सोने नहीं देता, चुप कर ! यही हाल मेरे साथ होता है। मैं काम करता हूं, यह किसी प्रयोजन के लिए करता हूं। यह ठीक है मैंने मन्दिर बनाया। मेरे दिल में एक दर्द है उस दर्द के प्रभावाधीन में काम करता हूं ?

हम आये आये आये।

क्यों आये। इस लिये कि इन्सानी नसल दु:खी

है। क्यों दु:खी है ? क्योंकि तुम मन के चक्कर में आये हुये हो। अज्ञान है, तुम को सच्चाई का पता नहीं। सब तुम को अपने २ पीछे लगाते हैं। यह है क्या ? कौन बताता है तुम को सच्चाई ? अगर मुझे स्वार्थ होता तो मैं बात को पर्दे में रखता। आज मैं लाखों और करोड़ों रुपयों का मालिक होता। और जगह नोटों की बोरियां भरी जाती हैं। हमको अज्ञान में रखा गया है, हमारी दौलतें ली हैं और हमसे नाक रगड़वाये हैं। मैं आया ही इस वास्ते हूं। आज दिन तक किसी गुरु ने अपने चेले की इतनी बड़ाईयें नहीं की, जितनी दाता दयाल जी मेरी कर गये। शब्द में लिखते हैं।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दु:खी जीव को अंग लगा कर लेजा गुरु के देसा।

मैं जो मुंह से कहता हूं, मेरा वही नाम दान है। मैं नाम क्यों नहीं देता गो मैं दो तरफ से डिगरी होल्डर हूं ? एक दाता दयाल से, एक बाबा सावन सिंह से। अगर मैं छः हज़ार को नाम देता तो छः हज़ार रुपया महीने का आ जाता। मैं नाम

क्यों नहीं देता ? जब तुम अभ्यास करोगे, जो तुम्हारे *Subconscious mind* में इच्छा है वह पूरी होगी। क्योंकि आज कल के आदमी वासना अच्छी नहीं रखते, इसलिये सबको नाम देना जुल्म है। नाम किसको मिलना चाहिये।

विषयों से जो होये उदासा।
परमार्थ की जा मन आसा।
धन सन्तान प्रीत नहीं जाके।
खोजत फिरे साध गुरु जागे।

ऐसे आदमी को परमार्थ का नाम मिलना चाहिये। और कबीर के मुताबिक "काम क्रोध, मद, लोभ विसारो, शील, संतोष, छिमा, सत धारो, चोरी, यारी निन्दा त्यागो"। तब तुम नाम के अधिकारी हो। आम दुनियां को रूहानियत के नाम का अधिकार नहीं है। हम गुरुओं ने तुमको नाम नहीं दिया, अपने नाम के लिये कि मेरे दस हजार चेले हैं, बीस हजार चेले हैं, ऐसा कहलवाने के लिये सबको नाम दे दिया। नाम ने हमको खा लिया। अगर तुम्हारी नियत गन्दी है, इस ख्याल से कि

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तुम्हारा कल्याण हो, अगर फिर नाम जपोगे तो जरूर भला होगा। मगर वह तो कुकर्म करते रहते हैं और नाम के धारी बने हुये हैं। यह दर्द रखकर मैं कहना चाहता हूं कि ऐ दुनियां के महात्माओ ! या तो मेरी बात का खंडन करो और अगर मैं ठीक कहता हूं तो हर आदमी को नाम मत दो बल्कि जीने का राज़ बताओ। इन्सान ने सोचना क्या है ? घर में, गृहस्थ में तुमने कैसे गुज़ारा करना है ? इस वास्ते मैंने तालीम बदली कि अपने घरों में शान्ति रखो। तुम्हारे ख्याल में बड़ी ताकत है। जब दुनियां के लोग मुझे बना लेते हैं, मुझसे काम ले लेती है। इसका मतलब यह है उनके मन में ताकत है। मैं तो जाता नहीं, तुम्हारे मन की ताकत है। क्योंकि तुम अपने दोस्तों से रिश्तेदारों से, भाईयों से बैर रखते हो तुम्हारा ख्याल जो है उन पर असर करेगा, जरूर करेगा। तुम बच नहीं सकते। मैं ऐसे घरों को जानता हूं जहां लड़ाई हुआ करती थी। अगर नाम लूं तो गुस्सा लगेगा, उनको नुकसान हुआ। मैं अपना मुंह तो काला कर सकता हूं। अगर तुम्हारी बात कहूंगा तो तुमको गुस्सा आयेगा। मेरी औरत थी, मैं उसे

हंसा करता था, भागवती ! तेरा मन साफ नहीं है तुझको तकलीफ होगी। आखरी आयु में ६ साल चारपाई पर पड़ी रही। तुम गृहस्थी लोग हो, मैं तुमको जो कुछ कहना चाहता हूं दर्दे दिल से कहता हूं। किसी गुरु ने तुम्हारा वेड़ा पार नहीं करना तुम्हारा बेड़ा पार तुम्हारे अपने ख्याल ने करना हैं। मेरी बात को समझो। सुनो ! गुनो ! उस पर अमल करो, तब तुम्हारा वेड़ा पार होगा। तुम अगर यह सोचते हो कि तुम मेरे मंदिर के दो कमरे बना कर तर जाओगे, तुम भूल में हो। अगर रुपया देने से ही कोई तर सकता तो यह बड़े २ कोठियों वाले, रुपया देकर तर जाते। यह बात झूठी है। मैं आया हूं इस वास्ते। मेरे जिम्मे डियूटी है दाता दयाल की।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा,
दुखी जीव को अंग लगा कर, ले जा गुरु के देशा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं. निबल, अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानो।

अब मैं क्या करूं ? गुरु का देश क्या है ? गुरु का देश शान्ति है। वह मैं आगे कहूंगा। इस वक्त हकीकत, असलियत और सच्चाई ब्यान कर रहा हूं। ऐ इन्सान ! जो कुछ तुझको मिलना है, तेरे अपने ही ख्याल का नतीजा तुझको मिलना है और कुछ नहीं मिलना। अगर बड़े २ महात्माओं का पिछली जिन्दगी में हाल खराब न होता तो मैं मान जाता। पल्टू साहिब थे, जो यह कहते थे, "हम वहां के बासी, जहां पहुंचे नहीं अविनाशी"। उनके साथ क्या हुआ ? अवतार हो, संत हो, पीर पैगम्बर हो हर एक को अपना २ कर्म भोगना पड़ता है। कोई बच्च नहीं सकता तो मैं दर्दे दिल से सत्संग करा रहा हूं। तुम हच्चाई को सुनते नहीं। जो लोग तुम को सबज़ बाग़ दिखाते हैं, तुम वहाँ सिर मुंडवाते हो जो तुमको झूठ कहते हैं कि नाम ले लो और अंत समय में गुरु तुमको सतलोक ले जायेगा। तुमको जो सच्ची बात कहे तुम उसका विरोध करते हो। तुमको गुरु ने ज्ञान देना है, समझ देनी है, विवेक देना है बाकी जो कुछ तुमको मिलना है वह तुम्हारे अमल का फल मिलना है।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

दाता दयाल की धाम उजड गई। अगर ऊनमें कोई ताकत थी तो धाम को न उजड़ने देते। बाबा सावन सिंह बीमार हुये, स्वामी राम कृष्णा परम हंस का क्या हाल हुआ। अगर इनमें कोई ताकत थी तो वह अपनी २ बीमारी को ठीक कर लेते।

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।

जो जस कीना ते तस फल चाखा।

भल जाओ कि अगर तुम बड़े से बड़े गुरु के चेले बने हुये हो तो अपने कर्म से बच जाओगे यह ग़लत है। हर आदमी को कर्म की सज़ा मिलेगी। कर्म से बचने का भी एक तरीका है, वह मैं आगे कहूंगा। तो सक्चाई क्या है? वह यह है कि जो कुछ तुम करते हो तुमको उसका फल मिलेगा। इसके वास्ते है वेद मार्ग, शिव संकल्पम् अस्तु:। अच्छा ख्याल रखो। मैं हिन्दु धर्म से बाहर नहीं जाता। शब्द मेरे अपने हैं। एक मन्त्र है उसका मतलब है, हे प्रभु जिनसे हम दुश्मनी करते हैं, जो हम से दुश्मनी करते हैं, हमारी दुश्मनी के भाव को जला दो। मगर तुम हिन्दु होते हुये क्या नफरत नहीं करते? आर्य

समाजियों की सनातनियों से नफरत, राधास्वामियों की दूसरों से नफरत, फिर तुम यह आशा रखते हो कि तुम्हारा कल्याण हो जाये, गलत बात है, कोई नहीं बच सका। कर्म गति टारे नाहिं टरे। यहां तक आपको हकीकत बता दी। अब संसार से पार जाने के लिये संत क्या कहते हैं? वह कहते हैं सुमिरन, ध्यान और भजन करो। यह क्या है? हमारी Life Energy है। हमारी ज़िन्दगी जो है वह Energy है। जिस तरह बैट्री में एक Current होती है और एक E. M. F. होती है। जो Current है वह हरकत में रहती है और जो E. M. F. है वह अपनी जगह कायम रहती है। तो हम सब लोग Current में हैं। अब मैं Current को ज़िन्दगी कहता हूं और E. M. F. को तुम्हारी हस्ती कहता हूं। तुम्हारी हस्ती जो है वह है सतलोक, उसकी जो ज़िन्दगी है वह तुम्हारी हस्ती है। जब तक कोई आदमी इस जिन्दगी से निकल कर हस्ती में नहीं जायेगा, जिन्दगी में जितना संघर्ष कशमकश है वह हमेशा रहेगा। कोई टाल नहीं सकता। जब तक जिन्दगी है, ज़िन्दगी में सुख भी है दुःख भी है।

लाख तुम अच्छे ख्याल करो, इस कर्म के चक्कर से निकलना बड़ा कठिन है। सन्तों ने इसका उपाय बताया। वह कहते हैं ज़िन्दगी में आप ज़िन्दगी से निकल कर हस्ती में चले जाओ। हस्ती में कब जाओगे, जब तुमको अपने शरीर के बोधभान, मन के ख्यालात, इन दोनों को तुम छोड़ दोगे। जो कुछ बाकी रह जायेगा, वह तुम्हारी हस्ती है। मेरे सत्संग से तो समझदार लोग ही फायदा उठा सकते हैं, दूसरे नहीं। बच्चों का मेरे सत्संग में क्या काम? तो जब तक हम ज़िन्दगी को छोड़ कर हस्ती में नहीं जायेंगे, और हस्ती में जाना हमारा जरूरी है। आज नहीं तो कल जाओगे। क्यों? जैसे Current बैट्री से निकली उसने वापिस बैट्री में ही जाना है। ऐसे ही हम जहाँ से आये हैं, वापिस जाना है। चाहे दो जन्म लगें, दस लगें, हमें कोई रोक नहीं सकता। यह प्रकृति का नियम है हम को मुक्त होना है। मुक्ति हम को मिलेगी, कोई रोक नहीं सकता, यह हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है। तो जिनका वक्त आ जाता है वह सन्तों के दरबार में आ जाते हैं।

वह क्या बताते हैं ? वह कहते हैं भजन करो, ध्यान करो, सुमिरन करो। ध्यान से तुम्हारी ज़िन्दगी अच्छी बन सकती है। जिस २ प्रकार का ख्याल लेकर तुम ध्यान करोगे वह ख्याल पूरा होगा। जिस नाम का तुम जाप करते हो और उसका अगर तुम को मतलब मालूम है तो तुम पहुंच आजोगे। वह कैसे ? मैं निंबू का नाम लेता हूं। तुम्हारे मुंह में पानी आता है या नहीं आता। मगर यदि अंग्रेज बैठे हैं उनके सामने मैं निंबू का नाम लूं तो उनके मुंह में पानी नहीं आयेगा। क्यों नहीं आयेगा ? क्योंकि वह निंबू का मतलब नहीं जानता। तो जो गुरु नाम देता है उसकी यह डियूटी है कि वह चेले को यह बता दे कि इस नाम का अर्थ क्या है। जो नाम जपता है उस नाम की अवस्था क्या है। अगर उस की हकीकत का पता नहीं है वह लाख नाम जपता रहे उसको कुछ नहीं मिलता। जिस तरह जिसको निंबू के अर्थ का पता नहीं है बेशक कोई निंबू निंबू करता रहे अंग्रेज के मुंह में पानी नहीं आयेगा। ऐसे ही उन लोगों के दिमाग में, जो नाम लेते हैं और नाम के असली अर्थ को नहीं जानते उनको कुछ नहीं

मिलना। ऐसे ही यह नाम गुरु द्वारा मिलना चाहिए। तुम लोगों ने यह समझा हुआ है कि गुरु के पास से नाम ले लो, और बस। गुरु के पास जाकर कुछ दिन संत्सग करो। असलीयत को समझो। वह जो तुमको समझ मिलेगी फिर जब तुम नाम जपोगे, तब काम बनेगा। दुनियां ग़ाफिल है।

सुनते नहीं हैं दुनियां ग़ाफिल मेरा कलाम
बेदार ही के कहत हूं ताबीर खवाव की।

खवाव तुम्हारा ख्याल है। सुमिरन ध्यान तुम्हारी जिन्दगी को बनायेगा। शर्त यह है कि तुम किसी काम्मिल पुरुष के सत्संग मेंजाओ। क्योंकि तुमको पता लग जायेगा किस प्रकार के ख्याल और विचार तुमने करने हैं। तुम्हारी जिन्दगी सफल हो जायेगी। अगर जिन्दगी मे हस्ती से जाना चाहते हो तो भजन है। भजन क्या है? अपने अन्दर शब्द को सुनना, प्रकाश को देखना, आम दुनियां यह ही कहती है। मगर असली भजन यह भी नहीं है। एक आदमी सारी जिन्दगी वेशक शब्द सुनता रहे अगर उसको ज्ञान नहीं है तो उसको आनन्द मिलेगा, भव सागर से पार नहीं जा सकता। मैं आपको सत्संग दे रहा हूं। क्यों दे रहा हू?

हम आये आये आये हैं।

तुम को दुखी देख आंखों से, मन में दया समाई,
दया रूप धर प्रगटे जग में, दया यहां ले आई।
सूरज दया का गगन प्रकाशा, किरनें दया की धारा,
दया सिंध उमगा और बाढ़ा, दया भाव बिस्तारा।
सुर नर मुनि की यह है रीती, लग स्वारथ करे प्रीती,
हम में नहीं है स्वारथ किंचित. लख-लख करो प्रतीती।
उदर निमित्त करें सब भेसा, योगी जती उदासी,
मांगे भीक ज्ञान की गम नहीं, तुम उनके विश्वासी।
भूल भरम तज कर सतसंगत, हिये की आंख खुलाओ,
राधास्वामी रूप निरख कर, दया से काज बनाओ।

फूंक तो मैं मार नहीं सकता, वह करामात तो है नहीं, न मैं झूठे वायदे करता हूं कि मैं तुमको मरते समय ले जाऊंगा। वह जो नाम है वह किसी गुरु के अधीन होना चाहिए। तुमने यह समझा है कि गुरु ने तुमको नाम दे दिया। ग़लत है। गुरु की यह डियूटी है कि वह तुमको नाम की असलीयत, और हकीकत बता दे ताके जब तुम उसको जपो तो तुम्हारे अन्दर जो उसकी तासीर है वह आ जाये। अगर

तुमको नाम की असलीयत का पता नहीं है। तुम बेशक दो २ घन्टे उस नाम का सुमिरन करते रहो, तुमको कोई लाभ नहीं होगा। तुम लाख नाम जपते रहो, जब तक तुमको नाम के असली मतलब का पता नहीं वह नाम तुमको खा जायेगा। मैं तुमको बता रहा हूं कि भजन कैसे करना चाहिये। पहले तो जो नाम लिया है उसके मतलब को जानो। जब तुम उसके भाव को समझोगे, जब वह नाम जपोगे, तो जो हालत तुम्हारे दिमाग में उस नाम की आई हुई है उस हालत का विकास होगा। नाम के अर्थ को समझो कि नाम का अर्थ क्या है। जब तुमको उसकी असलीयत का पता लगेगा, जब तुम जपोगे, तो जो अवस्था उस के नाम की बताई हुई है वह तुम्हारे अन्दर पैदा होगी, तब तुम तरोगे, यह बिल्कुल सच्ची बात है। क्योंकि मेरे जिम्मे डियूटी थी तालीम को बदल जाना। तालीम तो वही है। मैंने सच्चाई को प्रकट कर दिया।

साधो भजन भेद है न्यारा।

मैंने तुमको बता दिया कि तुम सुमिरन करते हो,

तुम बेशक किसी नाम का सुमिरन करते रहो। जब तुमको नाम की असलीयत का पता लगेगा फिर तुम जब नाम जपोगे तो वह गुण तुम में पैदा होगा। मुझे यह खुशी नहीं है कि आप S.P. हैं और मेरे चेले बन जायें। मुझे चेले बनाने की हवस नहीं, न मैं गुरु हूं, न गुरु बनने की हवस है। दाता दयाल की लोहे की ज़ंजीर मेरे गले में पड़ी हुई है, मैं घसीटा जा रहा हूं। पता नहीं मैं ठीक करता हूं या ग़लत। मैं अपनी तरफ से सच्चाई ब्यान किये जा रहा हूं। तत्व का विचार जब तक किसी को नहीं आता वह इस भव सागर के जाल से बच नहीं सकता। मुझको तत्व विचार नहीं आता था। राधास्वामी को मानने वालो! मालिक तुम्हारा कल्यान करे। जब से मुझे पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रगट होता है और मैं नहीं होता तो मैं सच्चाई को जानने के लिए मजबूर हो गया। रूप जब प्रगट होता है यह मन बनायेगा। शब्द मेरा मन बनायेगा। तो मैं मन को छोड़ जाता हूं। बाकी क्या रह जाता है? प्रकाश है और शब्द है। अब तत्व को मैंने क्या विचारा? मैं

अपनी आत्मा से पूछता हूं, मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। जब मैं शब्द में होता हूं और प्रकाश को देखता हूं तो उस चीज़ को ढूंढता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। उसका अन्त नहीं मिलता! आप लोगों की दया से यकीन तो मुझको हो गया कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं जाता और यह भी यकीन हो गया जो रूप मेरे अन्दर प्रगट होता है वह कल्पित है। अगर मैं उस कल्पित को सच्च मानूं तो मेरे दुनियां के काम बन जायेंगे और अगर दुनियां के काम से बाहर जाना चाहू तो मुझे कल्पना से बाहर जाना चाहिये। यही बात बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे। दस दरवाज़े लंगो आगे गुरु खड़ा है। आगे है प्रकाश और शब्द अब मैं सोचता हूं कि मैं इतना ऊंचा जाने के बाद क्या कुछ कर सकता हूं। चलो मैं न सही तो क्या पिछले गुरु कुछ कर सकते थे? कैसे मानू, यह अपनी बीमारी दूर न कर सके तो तुम्हारी बीमारी को कैसे दूर कर सकते हैं। उनके अपने आश्रमों में गद्दियों के झगड़े होते हैं। तो मैंने तत्व

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

क्या विचार किया ? ऐ दाता, मुझे नहीं पता मैं क्या कर रहा हूं। जो कुछ मैं कर रहा हूं अगर यह ग़लत है तो मैं दोषी नहीं। आप जानें या बाबा सावन सिंह जानें उन्होंने मुझे यह काम क्यों दिया ! मैं वह बात कहता हूं, जो मेरे जीवन के तजुर्बे में आई है। वहां पहुंच कर मुझ में कुछ ताकत होनी चाहिये कि जो कुछ चाहूं उसे कर सकूं। मैं नहीं कर सकता। मैं न सही यह गुरु तो कर सकते, वह नहीं कर सके। फिर मैं कौन हूं। मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। एक परम तत्व है, जिस को आज दिन तक किसी ने नहीं जाना वह क्या है पता नहीं। *It is what it is.* कबीर ने कहा।

एक कहूं तो है नहीं दो कहूं तो गार,
जैसा है तैसा रहे कहे कबीर विचार।

वह एक परम तत्व है वह क्या है, क्या नहीं। मुझे तो पता नहीं लगा *Evolution* के सिलसिले में बन गया। जब उसकी मर्ज़ी होगी खतम हो जाऊंगा। इस बात से मुझे क्या मिला। शान्ति मिली। अब मैं न अभ्यास करने की इच्छा करता हूं,

स्वाभाविक जो काम होता है, होता रहता है। मुझे मालूम हो गया मैं कौन हूं। मैंने जो तत्व विचार किया ए मेरी वहनों, भाईयो, सम्भव है जो कुछ मैंने समझा है वह ग़लत हो। मुझे इसका कोई अफसोस नहीं। अगर दाता दयाल वहाँ पहुंच कर कुछ बने हुए होते तो अपनी धाम को उजड़ने न देते। इस वास्ते मैं किस नतीजे पर आया ? दाता ने कहा था कि तालीम को बदल जाना। मुझे पता नहीं मैंने क्या काम किया ज़िन्दगी में। तबीयत सच्चाई पसन्द है। मैं चाहता हूं अगर मैं ग़लत हूं तो दूसरे महात्मा मेरा खंडन कर जायें मुझे कोई अफसोस नहीं। मैंने क्या तत्व बिचारा ? एक Super most element है, उससे दुनियां बनती है। कहीं सूरज हैं, चांद हैं, कई लोक हैं। तमाम कीड़े मकोड़े सब खेल हैं। उसकी गति को वही जानता है। हम बन जाते हैं हम में एक 'मैं' आ जाती है। वही मैं हमको कभी बाप बनाती है, कभी चेला बनाती है, कभी बेटा बनाती है, कभी औरत है, कभी भगत बनाती है, मैं क्या कुछ नहीं बना। तो मुझे यहां क्या मिला ? शान्ति ! मैंने

सतसंग शुरू किया था कि असलीयत, हकीकत, और सच्चाई क्या है ? जो मैंने समझा, ऐ संसार के प्राणीयो ! अपने कर्म भोग बस कह चला हूं। कोई दावा नहीं जो कुछ मैंने कहा है, समझा है ठीक है या गलत। मेरे जिम्मे एक डियूटी थी। दाता का ऋण था। दुर्गादास का भला हो इसने मेरी मदद की, मन्दिर में। मैं अपना काम कर चला। पता नहीं गलत किया है या ठीक, मेरी नीयत साफ है। मैंने जो कुछ समझा, वह कहा। तत्व विचार मैंने यह समझा।

साधो भजन भेद है न्यारा।

लोग यह समझते हैं। सारी उम्र शब्द को सुनते रहो, तुम तर जाओगे। शब्द के सुनने के बाद एक अनुभव पैदा होता है। जो मैं कह रहा हूं। मैं शब्द सुनता हूं। मेरी खोपड़ी में रात को भी दिन को भी, शब्द गूंजता है। मैं सोचता हूं मैं क्या बन गया ? अपने पेट की बीमारी को दूर नहीं कर सकता। आज डाक्टर के पास से दवाई ली है। क्या बन गया मैं ? यह संत क्या बने ? धोका दे

कर झूठ कहकर उन्होंने मान इज्जत ले लिया यह एक और बात है मगर जो कुछ उनके पास है मैं जानता हूं। मैंने गुरु बन के देखा है। सच्चाई कोई ब्यान नहीं करता।

सबको राधास्वामी !

सत्संग परम दयाल जी महाराज

श्री त्रिलोक चन्द जी के मकान पर नं० 4 सेक्टर 19 ऐ में

तिथि 30 जून 1977

ज़िन्दगी क्या है. हम करते क्या हैं। किसी मज़हब वाले के पास जाओ वह अपने मज़हब, अपने इष्ट को सबसे ज्यादा ऊंचा मानता है। शिव पुराण को पढ़ो, वह कहते हैं. जो कुछ है वह शिवजी है। विष्णु पुराण को पढ़ो, वह कहते है, जो कुछ है वह विष्णु है। गुरु मत में देखो जो कुछ है वह गुरु है। मैं खोजी हूं मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। मैंने क्या समझा, न शिव बड़ा है, न विष्णु बड़ा है और न गुरु बड़ा है। तुम्हारा अपना आप जो है यह बड़ा है। तुम ही अपनी अकल से मान कर विष्णु की पूजा करते हो। तुम ही अपनी अकल से मान कर शिवजी की पूजा करते हो। तुम ही अपनी अकल से बाबे फकीर को बड़ा मानते हो। दरअसल हकीकत क्या है ? राधास्वामीमत कहता है

कि पूरा गुरु ढूंडो। ग्रन्थ साहिब में लिखा हुआ है पूरा गुरु ढूंडो। ब्यास वाले कहते हैं हमारा गुरु पूरा है। आगरे वाले कहते हैं हमारा गुरु पूरा है। मेरे चेले कहते हैं बाबा फकीर बड़ा है। अब जीव के लिये यह मुसीबत है कि वह किधर जाये। अगर वह एक को पूरा मान लेता है तो उसके मन में दूसरों के लिये नफरत आ जाती है। संत कृपाल सिंह और ब्यास वालों की आपस में बनती नहीं है। अब संत कृपाल सिंह चोला छोड़ गये हैं। उनके २, ३ जान-नशीन हो गये हैं। इस हालात को देखकर, चूंकि मैंने प्रण किया था कि जो कुछ मुझे मिलेगा कह जाऊंगा, मैं वह बताना चाहता हूं। क्यों बताना चाहता हूं? जो लोग मुझको सबसे बड़ा मानते हैं और कहते हैं कि बाबे फकीर ने यह कर दिया वह कर दिया, मुझे सबसे ऊंचा मानते हैं। मैं चूंकि कुछ नहीं करता इसलिये मैं इस नतीते पर आया हूं कि ऐ इन्तान, बड़ा तेरा अपना ही आप है। इस वास्ते क्या करना चाहिये? यह तुम्हारा विश्वास है। अगर तुम्हारा विश्वास किसी के साथ पक्का है तो तुम्हारे विश्वास से तुमको फायदा पहुंच जायेगा। मैं

यह बात निर्भय होकर कहना चाहता हूं। कोई महात्मा, कोई गुरु, किसी को कुछ नहीं देता। तुमको अगर तुम्हारा विश्वास है तो तुमको सब कुछ मिल जायेगा। अगर तुम्हारा विश्वास नहीं है तो कुछ नहीं। किसी को किसी वक्त पिछले जन्म के कर्मों का फल मिलता है। जैसे मैं हूं, मेरे पिछले जन्म के कर्म हैं, मुझे यश मिलता है। मेरे ग्रह ऐसे हैं मैं किसी के साथ कोई नेकी नहीं करता, मुझे यश मुफ्त में मिलता है। कई आदमी हैं वह नेकी करते २ थक जाते हैं उनको बदनामी मिलती है। मैं कुछ नहीं करता मुझे नेकनामी मिलती है। मैं कई बार सोचता हूं फकीर चन्द, तुमने गुरुमत का सत्यानाश कर दिया। गुरु मत में पूरे गुरु की तलाश क्यों की जाती है? जिसे पूरा गुरु मिल जाता है उसके दिमाग़ से गुरु और चेले का ख्याल उड़ जाता है। जो बाहर का गुरु अपने चेले के दिमाग़ से गुरु और चेले के भाव को उड़ा दे वह पूरा गुरु है। मैं जानता हूं मैं बहुत ऊंचा बोल रहा हूं, आप समझ नहीं सकते। आप दुनियांदारों के लिए किस चीज़ की ज़रूरत है? अगर तुम हकीकत असलीयत और सच्चाई को

जानना चाहते हो तो समझो कि हम हैं कौन, कहां से आये हैं, हमारा आद क्या है ? तो आपके लिये संत-मत है और अगर आप दुनियां चाहते हैं तो आपके लिये संतमत नहीं है। आपके लिये वेद मार्ग है शिव संकल्पम् अस्तु: । अच्छा ख्याल रखो । क्योंकि तुम्हारी जिन्दगी का आधार ख्याल पर है । कई दफा मैं सोचता हूं मैं इस जन्म से पहले क्या था ? दाता दयाल ने जरूर मुझे यह कहा था कि फकीर चन्द ! मैं पिछले जन्म में गौतम बुद्ध था और तुम भिक्षु थे। मगर इसका कोई सबूत नहीं । क्योंकि उनका अनुभव बहुत जबरदस्त था । हो सकता है. वह पिछले जन्म में गौतम हों, मैं नहीं जानता, मुझे कोई पता नहीं । मैं सोचता हूं आज आप लोगों को क्या कहूं । आप लोगों को यह कहना चाहता हू कि जिस जगह तुम्हारा विश्वास है उसको पूर्ण मानो । मैं नहीं कहता कि तुम मुझे मानो । जिस रूप में तुम्हारा विश्वास बैठता है, उसको पूर्ण मानो कि वह सब कुछ देने वाला है । अगर तुम्हारा ऐसा विश्वास है तो तुम्हारी जिन्दगी को सब कामनायें पूरी होंगी । अगर तुम यह चाहो कि किसी के मानने से तुम्हारा

आवागवन छूट जाये तो यह नहीं होगा। शिव का उपासक आवागवन से बच नहीं सकता। आवागवन से तो वह बचेगा जिसको यह ज्ञान मिल जाये कि मैं कौन हूं। तो यह ज्ञान देने वाला कोई बाहर का गुरु होगा। आप लोग आये हैं। मैं नहीं चाहता कि तुम अपने २ गरुओं को, अपने २ ख्याल को छोड़कर मुझे पूजो। मेरी यह इच्छा नहीं है। जिस रूप को तुम मानते हो उसको पूर्ण मानो तुम्हारा काम बन जायेगा। एक उदाहरण देता हूं। एक औरत है, उसको लड़का मां मानता है, उसका भाव और होगा, उसी औरत को एक आदमी अपनी बहन मानता है जब वह उससे बात करेगा उसके मन की हालत और होगी, तीसरा उसको औरत मानता है उसके मन की हालत और होगी। तो मेरे कहने का यह मतलब है कि ऐ इन्सान! जो कुछ है वह तेरा अपना ही विश्वास है, तेरा अपना ही यकीन है, तेरी अपनी ही श्रद्धा है। यह मेरा तजुर्बा है। लोग मुझ पर विश्वास करते हैं, मेरे काम नहीं होते, उनके हो जाते हैं। अब मेरी अकल चक्कर खा गई। लोग कहते हैं कि बाबा तू जाता है मगर झूठ बोलता है

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

मैं अपने शरीर की कसम खाता हूं, अपने गुरु की खाता हूं, भाईओ ! मैं नहीं जाता *Intuition* होती है। यह ठीक है कि एक अनुभव होता है। जिस तरह एक अकलमंद आदमी धुयें को देखकर कहेगा यहां आग जरूर होगी। इस तरह अनुभव से जो बात मैं कह देता हूं वह ठीक होती है। अनुभव हो गया तो मैं खुदा तो नहीं बन गया। इसलिये मैं किसी को भी फकीर चन्द के पीछे लगाने के विरुद्ध हूं। हाँ, जो मैं कहता हू उसको मानो। दूसरा सवाल अपने आप से मैं यह कहता हूं। क्या किसी को मानने से कुछ बन जाता है ? हां और नहीं। अगर इन्सान का विश्वास है तब तो बन जाता हैं। मगर कभी २ मुझे असफता हुई। कई आदमी हैं जिनके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ। वह मुझको नहीं जानते थे। चार २ पांच २ साल के बाद जब उन्होंने मुझे देखा तब उन्होंने मुझे बताया। मसाल के तौर पर डाक्टर आई· सी· शर्मा अमरीका में काम करता है। मैं वहां जाता हूं १९५९ में क्योंकि वह *P. H. D.* है *Philosophy* और अंग्रेजी का, उसको परमार्थ का शौक था। पुराण जानता है, वेद जानता है, संस्कृत

जानता है, प्रार्थना किया करता था, उसके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ और कहा तेरा इसी जन्म में काम हो जायेगा। मगर १९६५ में जब मैं बिरला मन्दिर देहली में सतसंग दे रहा था तो वह मेरे पास आया और कहने लगा। मैं फलां आदमी हूं अमरीका जा रहा हूं, आप १९५९ में मेरे अन्दर प्रकट हुये थे। अब मैं कहता हूं कि मैं उसके अन्दर नहीं गया। मुझे नहीं पता। यह क्या खेल है? मैं साफ नहीं कर सका। सिर्फ इतना कह सकता हूं कि मुझे नहीं पता। एक राम स्वरूप स्कूल मास्टर है गवालियर में। वह डाक्टर की *Practice* भी करता है। दवाईयें देता है। मगर लायेसैन्स नहीं है उसके पास। किसी अमीर आदमी को उसने दवाई दी और वह उल्टी बैठ गई, वह मरने वाला हो गया। अब वह घबराया कि अगर यह मर गया तो मैं फंस जाऊंगा। क्योंकि मेरे पास लायेसैन्स नहीं है। वह कहता है मैंने राम से प्रार्थना की कि मुझे बचाओ। एक आदमी उसके अन्दर प्रगट हुआ और कहा कि फलां दवाई, और इन्जेक्शन जाके दे दे वह बच जायेगा। वह १२ बजे रात को वहाँ गया। उसको दवाई और इन्जेक्शन दिया और

वह बच गया। उसको यह पता नहीं था कि कहने वाला कौन है। चार पांच महिने के बाद एक हीरा सिंह था, वहां गया। उसने मेरी कोई किताब उसको दी। उसमें मेरी फोटो थी। वह कहता है यह था जिसने मुझे हिदायत की थी, अब वह वहाँ से सीधा होशियार पुर आया। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द! तू गया था? मैं नहीं गया। मुझे नहीं पता, मैं यह साफ बयानी क्यों करता हूं? इसी अज्ञान में रख कर, इसी हकीकत को न बयान करके हम गृहस्थियों को इन मजहब वालों ने मूर्ख बना कर लुटा है। हम गृहस्तियों को जो दुनियां की आशाओं में पड़े हुये हैं, उन्होंने हम को ऐसी-ऐसी बातें बता-बता कर हमारे धन भी लिए, हम से नाक रगड़वाये, फिर आप मर गये और हम को जिनको वह गद्दियां दे गये, उनके पीछे लगा गये। मुझे दाता ने हुक्म दिया था कि फकीर! जमाना बदल जायेगा, मेरी बर्णनशैली को दुनियां पसन्द नहीं करेगी। तू चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। अब मैं आत्मा से पूछता हूं मैं क्या तालीम बदलूं? यह बदलता हूं ऐ भोले भाले इन्सान! तू अपनी आत्मा में सच्चा बन।

सच्चा बन के पुकार किया कर। जिस तरह से उस राम स्वरूप ने दुखी हो कर परमात्मा से प्रार्थना की तो कुदरत ने मेरा रूप धर करके उसको दवाई बता दी और उसका काम बन गया। तू अगर सच्चा बन के मालिक के आगे पुकार जब करेगा जो कुछ तू मांगेगा वह तुमको मिलेगा। तुम्हारे मसला को हल करने का कोई न कोई वसीला बन जायेगा। मैं गुरु ढूंढने के लिये गया था। राम को मिलने निकला था। चौबीस घण्टे रोया। डाक्टरों ने कहा पागल हो गया है। कुदरत मुझे वहां ले गई जहाँ मेरा काम बनना था। आज के सतसंग में उदाहरण देकर क्या कहना चाहता हूं ? सच्चे बनो। वजाये इसके कि तुम फकीर चन्द के आगे हाथ फैलाओ या किसी मन्दिर में जाकर प्रार्थना करो अपने अन्दर बैठो, अपने विश्वास के मुताबिक उस मालिक को याद करो। उसका कोई रूप नहीं सब रूप उसके हैं। जब तुमने सच्चे होकर पुकार की, मालिक की कृपा वृष्टि तुम पर बरसेगा। आपके काम का कोई न कोई वसीला बन जायेगा। तुम लोग मेरी तारीफ करते हो। अगर कोई मेरी इस लिये तारीफ करता है कि मैं सत ज्ञान दाता हूं,

सच्चाई ब्यान करता हूं तो मैं उसको *Deserve* करता हूं। अगर कोई इस लिये मेरी तारीफ करता है कि मैं लोगों के अन्दर प्रगट होता हूं, उनको दवाई बता देता हूं, मैं अमरीका में प्रगट होता हू तो ग़लत है। मैं झूठा यश लेने के लिये तैयार नहीं! मुझे कोई पता नहीं होता। मैं क्यों ग़लत तरीके से इज्जत लूं। आप आये हैं, मैं आपको अमली जिन्दगी का सबक देता हूं। वह क्या है? प्रातः उठो। अपनी एक जगह बैठो। जहाँ भी तुम्हारा विश्वास है। तुम हिन्दु हो मुसलमान हो, चाहे कोई भी हो। सच्चे बनकर इच्छा करो। मांगो मिलेगा। प्रकृति अपने आप कोई ऐसा प्रवन्ध कर देगी कि तुम्हारी वह इच्छा पूरी हो जायेगी। दूसरी बात यह है कि हमारी जिन्दगी है कई आदमी हैं जो कथा कहानी को पसन्द करते हैं कई कीर्तन को पसन्द करते हैं कई सुमिरन को पसन्द करते है, कई अपने अन्दर प्रकाश को देखने की कोशिश करते हैं। यह क्यों है? इन्सान की जिन्दगी जो है, यह कहीं से चल कर कही पहुंचती है। हम लोग कहीं से आये हैं और हमारे अन्दर शुरू में यह जज्वे पैदा होते हैं। जब हम बच्चे होते

हैं हम कहानियाँ पढ़ते हैं। असर हमारे दिमाग़ पर पड़ता है हम वैसा बनने की कोशिश करते हैं। बच्चों को नानी दादी से कहानी सुनने का बड़ा शौक होता है। कई ऐसे होते हैं जिनके अन्दर जज्बा प्रेम का आ जाता है और गाते हैं। जैसे आप गाते हैं, मनोरमा गाती है। तो सबसे पहले क्या चीज है? कथा, कथा में हमको एक ख्याल मिलता है बाहर से हमको कुछ काम करने का। फिर हम उस चाह के ख्याल में, उसकी चाह में बोलते हैं वह कीर्तन है। सुमिरन करते हैं। सुमिरन का अर्थ है याद। औरते हैं क्या वह पति का नाम लेती हैं? नहीं लेती। क्या हर वक्त फोटो को सामने रखती हैं? नहीं रखती। मगर उनके दिल में पति की याद रहती है। वह जो याद है वह सुमिरन है। इसी तरह से प्रकाश है और शब्द है, सुमिरन है, ध्यान है, फिर भजन है। इस भजन के बाद शब्द और प्रकाश सुनने के बाद एक और अवस्था है जहां जो हमारा अपना *Self* है उसको न शब्द सुनने की चाह रहती है और न प्रकाश देखने की चाह रहती है।

और न कोई कर्म करने की इच्छा रहती है। उसकी ज़िन्दगी की अवस्था ऐसी हो जाती है जैसे :—

जल में कमल. निरालम, मुरवी निशानीये,
सुरत. शब्द भवसागर, तरिये. नानक नाम वखानीये।

तो अब हर आदमी की सोपानें अलग अलग हैं मैं बहुत ऊंचा चला गया। मैं इस काबिल नहीं हूं कि छोटी छोटी कक्षाओं को पढ़ा सकूं। यह मेरे बस की बात नहीं है। मुझसे कोई यह आशा रखे कि दूसरी, चौथी कक्षा को पढ़ाऊं, मैं नहीं पढ़ा सकता। जिस तरह से कई प्रोफेसर हैं। वह एम. ए. को पढ़ाते हैं। इनके अपने बच्चे होते हैं पहली, दूसरी में पढने वाले, उनके लिये टयूशन रख देते हैं। उनकी अपनी तवीयत पढ़ाने को नहीं करती। तो मैंने प्रण किया था कि अपनी ज़िन्दगी का अनुभव कह जाऊंगा। मेरे लिये यह सन्त मत एक बड़ी समस्या थी। कौन ब्राह्मण है जो यह सुन सकता है "कृष्ण को कर्ता कैसे कहीये वह तो है काम का कीड़ा"। कौन ब्राह्मण है जो यह सुन सकता है कि 'वशिष्ट भूल गया, पराशर भूल गया। मगर मैंने संतमत की

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

बाणीयां पढ़ी। मैंने उस वक्त प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा। हो सकता है दोस्तो। जो कुछ मैंने समझा हो वह ग़लत हो। किसी बात का कोई दावा नहीं। मैं सेवक हूं, कमान्डर सिपाही को हुक्म देता है Fire! वह Fire कर देता है। मेरे ज़िम्मे डियूटी है अब यह शब्द सुनो।

अन घड़ैया देवा तेरी कौन करे सेवा।

अब तुम सोचो, मैं ब्राह्मण के घर पैदा हुआ। कुदरत मुझे कहां ले गई और मैं रोया करता था। दाता! मैं तो राम के मिलने के लिये निकला था फंस कहां गया? कौन ब्रह्मण है जो इन शब्दों को सुन कर अपने आप को ज़बत में रख सकता है। गाली निकालेगा कबीर को। इन संतो को सब गाली निकालते हैं! मैंने चूंके प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊंगा इस लिये अब मैं यह कहता हूं कि जो कुछ कहा वह ठीक कहा। इसका ख्याल किससे मिला? आप लोगों से। दाता दयाल से मुझे यह ज्ञान नहीं मिला। दाता दयाल से प्रेम मिला, उत्साह मिला, हौसला मिला मगर यह राज़ नहीं मिला। जब से मुझे पता लगा मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रगट हो और

मैं नहीं होता । तो मालूम हो गया कि जो गुरु को पूजता है वह भी अपने मन को पूजता है। जो शिव को पूजता है वह भी अपने मन को पूजता है। तो जो कुछ है वह महिमा किस की है? तुम्हारे अपने मन की महिमा है। तो मेरी आंख खुल गई। हज़ारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं। मुझे कोई पता नहीं होता कि मेरा कौन ध्यान कर रहा है। वह मेरे रूप को बना कर काम ले लेते हैं। मैं पहला एक इन्सान हूं फकीरों में से, जिसने इस सच्चाई को डंके की चोट पर कहा है। क्यों कहा है? मेरे जिम्मे एक डियूटी है।

तेरा रूप है अदभुत अचरज,
तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया,
परम् दयाल स्नेही।

मेरा नाम परम दयाल मेरे गुरु ने रखा है। मैंने इस राज़ को क्यों खोला? पाकिस्तान में क्या हुआ, मुस्लमानों ने "या अली" कह कर हिन्दुओं के सर काटे और हिन्दुओं सिखों ने "जय बजरंग बली या सत-

सिरीअकाल" कह कर के मुसलमानों के सर काटे। वह भी गुमराह और यह भी गुमराह। इस मजहबी Friction को दूर करने के लिये संतमत दुनियां में आया था मगर इन गुरुओं ने सच्चाई न ब्यान करके संतमत के फरीक बना दिये। कोई व्यासीया, कोई आगरीया, कोई होशियापुरीया बन गया। इन्होंने क्या किया? संतमत की जो असली तालीम थी वह तो उन्हों-ने दी नहीं। हम लोगों को मूर्ख बना कर हमारी जाय-दादें ले गये। अपने पुत्रों और पौत्रों को दे गये। इसलिये इस संसार में, मैं अनामी धाम से आया हूं। मैं अकेला ही नहीं तुम सब अनामी धाम से आये हो। मुझे पता लग गया, तुम को पता नहीं है। तुमको मैं पता देता हूं तुम भी वहाँ से आये हो। मैं तुमको पता देता हूं कि तुम अनामी से कैसे आये हो। मुझको यह पता तुम लोगों से मिला। सिर्फ इस एक ख्याल ने कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। मेरी जिन्दगी का तख्ता पलट गया। आखरी सोपान है क्या? जब से तुम लोगों से सुना कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है मैं तो होता नहीं, तो मुझे यकीन हो गया कि जो कुछ मेरे अन्तर प्रकट होता है यह माया है, कल्पित है,

मेरी अपनी कल्पना है। जब यह यकीन हो गया तो फिर जब मैं अपने अन्दर जाता हूं तो कहां जाता हूं? रूप रंग छोड़ जाता हूं। यही बाबा सावन सिंह जी कहा करते थे। दसवां द्वार लंगो तो अग्गे सत्गुरु खलोता है। किसने समझा बाबा सावन सिंह जी को। तुमने यह समझा हुआ है दस द्वारे लंगो, तो अग्गे दाढ़ी वाला बाबा सावन सिंह खड़ा होगा या बाबा फकीर खड़ा होगा सब भूल में हो। जब तक तुम्हारे सामने कोई रूप है। बाहर से कोई नहीं आता। सत गुरु सार ज्ञान का नाम है। जहां मैं बोलता हूं यहां तक तुम लोग नहीं पहुंच सकते। तो तुमको मैं कहता हूं तुम वहां न पहुचो. तुम्हारे मन के अन्दर बडी भारी ताकत है। तुम जैसा अपनी ज़िन्दगी को बनाना चाहते हो वैसा ख्याल करो। जैसा तुम बनना चाहते हो वैसी आस रखो। सारे आदमी तो परमार्थ के हकदार नहीं। मगर बात को समझो। जो राम को पूजता है उसको भी वही कुछ मिलता है जो कृष्ण को पूजता है उसको भी वही मिलता है और जो मुझको पूजता है उसको भी मिलता है। सब तुम्हारे विश्वास का खेल है और कुछ नहीं। तो आखरी

सोपान जो है, दिल तो मेरा चाहता है कि वहां मैं बोलूं, मगर सुनने वाला यहां कौन है। आखरी सोपान में क्या है ? जब से तुम लोगों से पता लगा कि मेरा रूप तुम्हारे अन्दर प्रकट होता है और मैं नहीं होता तो जब मैं अन्दर जाता हूं तो वहां प्रकाश है और शब्द है। उस चीज़ को ढूंढता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है। वह क्या है ? उस अवस्था में जब मैं चला जाता हूं तो मेरे दिमाग़ में कुछ भी नहीं रहता। न खालिक है, न खुदा है, न राम है, न करीम है। यही बात स्वामी जी ने अपनी बाणी में कही है।

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हिरदे तपन करारी।
संत दयाल जीव हितकारी,
भेद कहें अब निज कर भारी।
नहिं खालिक मखलूक न खिल्कत,
कर्ता कारन काज न हिक्कत।
दृष्टा दृष्टि नहिं कछ दरसत,
वाच लक्ष नहिं पद न पदारथ।
ज़ात सिफात न अव्वल आखिर,

गुप्त न परघट बातिन ज़ाहिर।
राम रहीम करीम न केशो,
कुछ नहिं कुछ नहिं कुछ नहिं था सो

सन्त कहता क्या है ? तुम यह समझते हो कि सन्त फूंक मार कर, तुमको बच्चे देता है, बीमारी दूर करता है। दीवानो ! अगर सन्त यह कर सकते होते तो यह लोग अपनी अपनी बीमारियों को दूर कर लेते। आज मेरी तबीयत खराब थी। मैंने डाक्टर साहिब को बुलाया और दबाई ली। तो मुझमें अगर ताकत होती तो मैं अपनी तकलीफ को को खुद दूर कर लेता। यह सब खेल तुम्हारे विश्वास का है। मत लुटो इन गुरुओं के आगे ! मैं गृहस्थियों के लिये अवतार ले कर आया हूं। तुम अपने बच्चों के पेट काट २ कर गुरुओं की कोठियें बनाते हो तुम्हारी अकल कहां मारी गई ? और हम गुरु लोग तुमको पर्दे में रख कर लूटते हैं इसलिये मैं काम करता हूं ताके अपने जैसे दीवानों को सच्चाई बता दूं। मैं खुद लुट गया था। मेरा १९०५ का एक दृश्य ही था और तो कुछ नहीं था। मैंने १२ साल तक जो कमाया वहां दिया। थूक खाये आरतियें

की, मगर शान्ति नहीं मिली। दाता ने दया की यह काम मुझको दिया और कहा था कि सच्चा सत-गुरु तुमको सतसगियों के रूप में मिलेगा और अब मिल गया। तुम्हारी बजह से मेरी आंख खुल गई। राज मेरी समझ में आ गया। मैंने जो संतमत को समझा है वह यही है कि गुरु भेद देता है, राज देता है। इसके सिवा जो तुम समझते हो कि गुरु कुछ देता है वह तुम्हारी भूल है। और अगर गुरु सच्ची बात नहीं कहते हैं तो वह दोषी हैं। इन के अपने लड़के दस नं: के बदमाश हो गये। तो ऐसी दशा में यह तमको कैसे ठीक करेगें। मैं बिल्कुल साफ कह रहा हूं। जिसका जी चाहे वह आये जिसका जी न चाहे वह न आये, जिसका जी चाहे मेरी किताब पढ़े, या न पढ़े। मैं ठेकेदार बनकर नहीं आया हूं। मेरे जिम्मे डियूटी थी। दाता ने कहा था फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। जो कुछ मैंने अनुभव किया वह कहे जाता हूं। सिद्धि, शक्ति है, मैं नहीं कहता कि नहीं, ख्याल में बड़ी ताकत है। जब तुम अपने ख्याल से मुझको बना लेते हो तो यदि मैं ख्याल से किसी के लिये कुछ चाहूं तो वह क्यों न होगा। यह

तो स्वाभाविक बात है। मगर यह सिद्धि शक्ति करने वाले पार नहीं जा सकते। सांई बाबा ने खुद माना है कि मेरा वहाँ जाने का अभी वक्त नहीं आया। मैं तो सिद्धि शक्ति करता हूं। ख्याल में बड़ी ताकत है। मैं सिद्धि शक्ति नहीं करता। मैं इसलिये इस दुनियाँ में नहीं आया था कि सिद्धि शक्ति करूं मेरे पास से सिद्धि शक्ति हो जाती है। मुझे कोई पता नहीं होता न मैं परवाह करता हूं। जब मैं यहां आया तो मैंने मास्टर मोहन लाल से कहा कि मास्टर मोहन लाल। मैं कुछ कहना चाहता हूं। तुम लोगों को कहता हू, औरतों को कहता हूं तुम अपने घर छोड़ कर इन साधुओं के पीछे फिरती हो। इन साधुओं के पास क्या रखा है? मैं इस वास्ते औरतों का गुरु औरत बना रहा हूं। वह तुम्हारे से ज्यादा से ज्यादा दौलत ले सकती है इज्जत तो नहीं लेगी। आज कल का गुरुईज़म एक ठगईज़म है। मेरा इलम ग़लत नहीं है। एक दफा मैं होशियापुर में था, एकदमी और एक औरत मेरे पास आये। मैंने पूछा क्या बात है?

कहने लगा मेरी औरत को भूत तंग करता है। ब्यास गया था तो किसी ने कहा आपके पास जाओ। तो मैंने कहा एक बात पूछता हू कि तुम मुझे क्या समझ कर आये हो ? उसने कहा, संत। तो मैंने कहा मेरे सामने झूठ तो नहीं बोलोगे, वह बोला कि नहीं। तो मैंने उससे पूछा कि बताओ तुम नामर्द नहीं हो ? उसने कहा कि हां। कितने साल से शादी की है ? सात साल से। मैंने कहा वहाँ कोई साधु आया करता है जो इन औरतों को सतसंग कराता है और कमरे में कान में उंगलियां डलवा कर इनको बैठाता है ? आता है। मैंने औरत को जरा आंख दिखा कर कहा सच बताओ ? उसने तुम्हारा सत नहीं लिया ? वह कांप गई। कह दिया हाँ ! मैंने ऐसी २ घटनायें सुनी। इसलिये मैं तालीम को बदले जा रहा हूं। कोई औरत किसी मर्द गुरु के पांव को हाथ न लगाये। मैंने तुमको बता दिया। सच्चाई गुरु में नहीं है सच्चाई तुम में है। अगर तुममें विश्वास है, तुम में श्रद्धा है, तुम में यकीन है, तुममें प्रेम है, तुम्हारा काम बनेगा। अगर तुम में नहीं है तो नतीजा भी कुछ नहीं। तुमको विश्वास की बात बताता हूं। मेरे पास मैजर

जनरल जय सिंह आया, सतसंग सुना और बड़ा प्रभावित हुआ। वह दस रु:, कुछ मिठाई और फूल लेकर मन्दिर में आया मुझे गुरु बनाने के लिये। मैं चारपाई पर बैठा हुआ था वह आया और बड़े प्रेम और श्रद्धा से मेरे सामने पेश हुआ। मैं उठा और उसको छाती से लगा लिया। मैंने कहा मैं गुरु किसी का नहीं बनता। मैं तुम्हारा भाई हूं। भाई के तौर पर जो मदद मैं आपकी कर सका वह करूंगा। उसने क्या किया? वह मेरे मकान पर जाता, सफाई करवाता सफेदी करवाई, दो कम्वल लाया, मैं बड़ा हैरान हुआ। दूसरे दिन सप्ताहिक सतसंग था तो मैंने कहा इतना बड़ा आदमी मेरे घर में सफाई करवाता है इसको क्या मिला? क्यों यह मेरी सेवा करता है? वह आया और कहने लगा कि जब मैं आया था, बाबा जी ने मुझे गले लगाया और सात दिन तक मेरे अन्दर प्रकाश और शब्द गूंजता रहा। यह बड़ी भारी हस्ती हैं, इसलिये मैं इनकी सेवा करता हूं। मैं बड़ा हंसा। मैंने कहा भाई जय सिंह! मैंने अपनी औरत को पता नहीं कितनी बार गले लगाया, उसकी सुरत न चढ़ी तेरी कैसे चढ़ गई? उसका विश्वास

था। उसने मेरे सतसंग से मान लिया जिस तर तुमने मान लिया। तुम्हारे मानने की वजह से तुमको सब कुछ मिलेगा मैं कौन हूं देने वाला ? हाँ ! जो कुछ मैं देता हूं वह दुनियां लेने के लिये तैयार नहीं। मैं क्या देता हूं ? ज्ञान देता हूं, भेद देता हूं राज देता हूं।

जेठ महीना, जेठा भारो, जीवन हृदय तपन करारी।

जीवों के अन्दर किसी चीज की चाह होती है। वह चाहते हैं। मगर उनको पता नहीं कि वह क्या चाहते हैं। मगर मन कुछ चाहता है। उसके लिये वह जवाब देते हैं। क्या ?

जेठ महीना जेठा भारी,
जीवन हृदय तपन करारी।

इसकी समझ मुझको तुम लोगों से मिली। तुम मेरे सच्चे सत्गुरु हो। मैं हूं फकीर। सच्चाई ब्यान किये जाता हूं। अगर मेरी बात को समझ कर साधन करोगे तर जाओगे नहीं तो डुबकी लेते रहोगे। यह बात मेरी समझ में कैसे आई। मुझको किसने बताया ? सिर्फ इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। तो अब मैं जो चीज प्रकाश को देखती है

और शब्द को सुनती है उसकी तलाश करता रहता हूं। उसकी अवस्था वह है जो यहां लिखी हुई है। न खालिक का ख्याल है, न मखलूक का ख्याल है, न गुरु है न कोई चेला है। मुझे तुम लोगों ने तार दिया। मैं होशियारपुर सतसंग करा रहा था। एक आदधर्मी दूर से आया। वह मेरे गले लग कर रोने लग पड़ा। मैंने पूछा क्या बात है? उसने कहा बाबा जी! मैंने नाम लिया हुआ था। मैं अभ्यास करता था। मैं अपने अन्तर गया। बड़ा भारी तालाब देखा और वहाँ चांद चमक रहा था। बत्तखें थी, बड़े २ फूल थे। वहां एक महात्मा खडा था उसके आगे मैंने मत्था टेका। उसने कहा मेरे पास आ जाओ अगर वचना है। तो मैं उस महात्मा की तलाश में बहुत जगह गया। किसी ने कहां यहां आपका सत्संग होता है। आप वही महात्मा हैं जो मेरे अन्दर प्रकट हुये थे। अब मैं ब्राह्मणी का जाया हूं, एक ही दफा जन्म दिया है। फिर पता नहीं क्या होगा। काहे को दुनियां को झूठ बोलूं। मैं तो गया नहीं। इन बातों ने मेरी आँख खोल दी। मैं कहां टक्करें मारता था। अब मैं इस मंज़िल पर पहुंचा। मेरा आद क्या है?

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

संस्कृत में इसको अव्यकृत कहते हैं। उसकी आत्म। है, उसको कहते हैं हरिण्यगर्भ, उसने अपने संकल्प से, अपने ख्याल से पहले आदमी को बनाया। उस आदमी ने बासना की, औरत बना ली और फिर सृष्टि रची गई। सब इस तरीके से पैदा हुये है। संत इस दुनियां के बनाने वाले को काल कहते हैं। वह ईश्वर, खुदा को नहीं मानते हैं। वह कहते हैं इसने तो हमको मार दिया, फंसा दिया। वह सत पद में जाना चाहते हैं। बैट्री में एक E.M.F. होती है, एक Current होती है। Current हमारी ज़िन्दगी है। E.M.F. जो है वह है सत पद। हम सत पद के परे के हैं। हम सत पद से आये हैं। यह ऊंची बात है हर आदमी इसको समझ नहीं सकता। जो समझने वाले हैं उनको ईशारा कर देता हूं। वह जो अवस्था है, वह है ऐ इन्सान! अपनी इज्जत करना आप सीख, अपने आप को जान, अपने आप को पहचान, त कौन है। तू उस परम तत्व आधार की अंश है और Evolution के सिलसिले में यहाँ आ गई। अब अपने आप को पहचान, इस दुनियां

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

में फंसा हुआ है दुखी होता है। यही स्वामी जी कहते है। आद भेद क्या है।

जेठ महीना जेठा भारी, जीवन हृदय तपन करारी।

भेद क्या है ? ऐ इन्सान, तू उस अनामी धाम से आया है जहाँ न खालिक हे, न मखलूक है, न खिलकत ह, वहाँ तुम्हारे Self के अन्तर किसी चीज़ की होश नहीं रहती। तू Evolution के सिलसिले में यहां आया है। तेरा आद घर वह है। तुम यहां मन के चक्कर में आकर फस गये। यह है राज़। अगर इस बात की समझ आ जाये तो जब तुम शरीर छाड़ोगे, तुम्हारी आसक्ति इस दुनियां से नहीं होगी, तुम इस दुनियां में नहीं आओगे, जो आवागवन से बचना चाहते हैं, उन्हें मैं बता देता हू। तुम लाख बाबे फकीर को गुरु मान ला, तुम लाख कानों में उगलियां डाल कर अभ्यास करते रहा, जब तक मरवे से पहले तुम्हारे मन के अन्तर स्थूल शरीर का प्यार अगर कोई बाकी है तो तुम्हारा आवागमन नहीं छूट सकता। वर्तमान साईंस वे इसको साबित कर दिया है। मरवे वाले को Sensitive scale पर डाक्टरों

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

ने रखा। जब जान निकल गई तो कोई १० ग्राम, कोई २० ग्राम और १५ कोई ग्राम घटा। वह कम क्यों हुआ? क्योंकि उसके अन्दर से जो चीज़ निकली वह भारी थी। क्योंकि वह भारी है इसलिये ज़मीन की कशिश उसको अपने दायरे से बाहर नहीं जाने देगी। लाख तुम बाबे फकीर को, देवी को, मुहम्मद को, गुरु को पूजते रहो। अगर तुम उससे प्रेम करते हुये मरोगे तुम्हारा आवागमन नहीं छूट सकता। यही बात हज़ूर राय सालिगराम साहिब ने कही। अन्त समय में फिल्म चलती है। जिस गुरु से नाम लिया है वह भी आ जाता है। इन गुरुओं ने हमारे साथ कितना धोखा किया है। नाम ले लो और जो मरज़ी करते रहो और अन्त समय में सत गुरु तुमको सतलोक ले जायेगा। खुदा के घर का कहर इन गुरुओं को कोई पूछने वाला नहीं। अरे बाबा, जो गुरु आता है वह यह लोग तो नहीं होते। एक बात सुनो! होशियारपुर में कारखाने पर एक मिस्त्री दो सेर पक्की खांड मेरे पास ले आया। मैंने कहा तू गरीब आदमी है क्यों लाया। कहने लगा बाबा जी, है नहीं वरना सब कुछ आपको दे देता। क्या बात

है जब बाबा सावन सिंह का चोला छूटा तो एक तरफ बाबा जगत सिंह गरु गद्दी पर आये और दूसरी तरफ संत कृपाल सिंह ने अपने आप को गुरु पेश किया। मैं सच्चा था। मैं हैरान हो गया कि किस गुरु को मानूं। मैंने यह बात सत्संगियों से कही। एक मन चला सत्संगी नौजवान कहने लगा मैं इसका फैसला कल कर दूंगा। हम 12 आदमी ब्यास गये। बाबा जगत सिंह से मिले। उस लड़के ने झूठ रो कर के कहा महाराज, कल मेरा बाप मर गया। उसने मरते वक्त कुछ कहा नहीं। मरते वक्त आपने उसकी रूह ले ली ? आपने उसकी रूह की संभाल कर दी ? तो बाबा जगतसिंह ने कहा उसकी रूह की संभाल सत गुरु ने कर ली, वह तो मज़ाक करके वापस चले गये। वह जो सच्चा आदमी था वह रोने लग गया वह कहता है मेरे पास ५०० रुपये थे, सावन आश्रम गया, आगरे गया, कहीं मुझे पता नहीं लगा कि सच्चाई क्या है। दो साल से आपका सतसंग सुन रहा हूं मेरे भ्रम चले गये, मेरी शंकाये चली गई। मेरे पास यही है जो दे सकता हूं और कुछ नहीं। तो मैंने आपको बता दिया हर मजहब वाला, हर

गद्दी वाला, अपने आपको सबसे ऊंचा बताता है अपनी तरफ खैंचने लिये के मगर हकीकत यह नहीं है। I am the incarnation of the truth and I have come on this earth to disclose this Secret जिस secret. को रखने से मेरे जैसे भोले भाले आदमी इन मजहब वालों, पंथ वालों के जाल में बुरी तरह जकड़े हुये हैं।

बन्धे को बन्धा मिले, छूटे कौन उपाय।
कर संगत निर्बन्ध की जो पल में देय छुड़ाये।

मैं निर्बन्ध पुरुष हूं। मुझे निर्बन्ध किसने किया? तुम लोगों ने। दाता मुझे निर्बन्ध नहीं कर सके। दाता ने मुझे प्रेम दिया, हौसला दिया, सिद्धि शक्ति दी। उसके लिये उन्होंने आप लोगों की सेवा दी थी। तो इस आयु में उन सत्संगियों को जिन्होंने मुझे गुरु माना मैं इनको सच्चा सतगुरु मान कर नमस्कार करता हूं। मैने जितना ज्ञान हासल किया आप लोगों से किया। मुझे पता लग गया असलीयत है क्या। असलीयत यह थी और यह भेद है जो स्वामी जी ने इशारों में कहा, मैंने डंडा हाथ में ले लिया साफ व्यानी कर दी। यही बात बाबा सावन सिंह जी

कहा करते थे। अरे, तुम मेरी बात नहीं सुनने कोई डडें मारने वाला आ जायेगा। वह डंडे मारने वाला मैं हूं। किनके लिये ? जो सच्चाई के इच्छुक हैं। जो पक्षपाती हैं वह मेरे पास न आयें। मैं उन्हें बुलाने नहीं जाता। मैं सच्चाई ब्यान करता हूं कि ये इन्सान संतमत की यह तालीम है। अगर आज मुझको यह सच्चाई मालूम न होती तो जिस तरह स्वामी जी ने मेरे पूर्वजों का खंडन किया है, मैं इनका वह खडन कर जाता कि यह सब याद रखते। मैंने इस खोज में उमर खो दी है। मैंने अपनी जिन्दगी में कभी झूठ नहीं बोला। मैंने कभी किसी का अनुचित पैसा नही खाया सच्चाई पर चला हूं यह देखने के लिए कि इन सन्तों के पास है क्या ! इनके पास यह है जो मैंने समझा है। ऐ इन्सान ! तेरा आद वह परम तत्व है। उसके Evolution से हम यहां आये हैं। जिन्दगी चार दिन की है यहां मुझे दाता कहा करते थे।

यह तो नहीं तेरा देश
देश है बिगाना

यहां सब बिगाने बसें,
कोई नहीं यगाना

ऐसे २ शब्द मुझे लिखा करते थे। मेरी समझ में नहीं आते थे। क्योंकि मेरे जिम्मे डियूटी थी दाता ने कहा था चोला छोड़ने से पहले तालीम को बदल जाना। हो सकता है जो कुछ मैंने समझा है सारा ग़लत हो। मुझे कोई अफसोस नहीं। मैं चाहता हूं अगर मैं ग़लत हू तो दूसरे महात्मा मेरा खंडन करें मुझे कोई अफसोस नहीं। मैं कोई दावा नहीं करता मैंने सारी उमर इस खोज में खो दी, सारी जिन्दगी मैंने सच्चाई की तलाश में खो दी। क्योंकि मैं सेवक हूं मेरे जिम्मे डियूटी थी। तो 1942 में बाबा सावन सिंह जी के पास गया था। मैंने कहा महाराज! मेरे जिम्मे डियूटी है। मैं करना नहीं चाहता। वह कहने लगे। क्यों? मैंने कहा मैंने सच बोलना है। तो उन्होंने कहा मेरे से सच नहीं कहा गया। एक तो दुनियाँ अधिकारी नहीं है दूसरे मेरा डेरा है। तुम निर्भय होकर काम करो मैं तुम्हारा सरंक्षक रहूंगा। तो मेरे लिये बाबा सावन सिंह जी के शब्द रक्षक हैं।

जेठ महीना. जैठा भारी जीवन हृदय तपन करारी।

अब मैं सोचता हूं क्या यह ठीक है ? क्या इन सन्तों को पता लगा ? सन्त उसकी तलाश में गये क्योंकि वह अपने आप को भूल गये, इसलिये कह दिया वहां कुछ नहीं। वास्तव में बात क्या है, इसका पता न सन्तो को लगा, न मुझे लगा। उसकी महिमा अनन्त है। कुदरत के विषय में कोई Definite राय नहीं दे सकता। जितनी बुद्धि थी उतनी २ सब ब्यान कर गये। मैं अब सब कुछ छोड़ कर यहां आया हूं। शरणागतम्। सब कुछ करके कहां पहुंचा हूं। शरणागतम्। आया वह है या नहीं, किसी को क्या पता ! किसी को उस कुदरत के राज़ का पता नहीं लगा। संत कोई खुदा है ? अगर इनके पास कोई ताकत होती तो यह लोग अपनी २ बीमारियों को ठीक कर लेते। अपने बच्चों को ठीक कर लेते। दाता अपनी धाम को उजड़ने न देते। तो मैं इस नतीजे पर आया हूं। शरणागतम्। एक ताकत है उसको दोस्तो, किसी रूप में मान लो। किस लिये गुरुओं के पीछे घूमते हो। हम सब ठग हैं। हम दुनियां को ठगते हैं। अपना मतलब

सीधा करना चाहते हैं। तुम को अपना जानवर बनाना चाहते हैं। मालिक का कोई रूप नहीं है। सब रूप उसके हैं। गुरु वह है जो तुमको शान्ति दिला दे और तुम्हारे भ्रम दूर कर दे।

तेरी लीला कौन जाने तू तो अपरमपार है।

मुझे पूजने से क्या मिलेगा। मैं तुम्हें सच्चा रास्ता बताये जा रहा हूं Be true to your self वह मालिक तुम्हारे अन्दर हर समय रहता है। एक मालिक है। ऐ मेरे बनाने वाले! जिन्दगी तेरी तलाश में गुजरी। मौज दाता के चरणों में ले गई उन्होंने सतमत दिया। प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दोस्तो, पता नहीं मैंने जो कुछ समझा है वह ठीक है, या गलत। सारी उमर दौड़ता रहा। आखिर यहां पहुंचा। उसका अन्त नहीं मिलता। वह क्या है किसी को पता नहीं। दाता! तूने काम दिया था। यह लोग मेरे पास आते है। अब लाज तेरे हाथ में है। मालिक करे तुम लोगों की अपनी अपनी मनोकामनायें पूरी हों। मैं शुभ भावना दे सकता हूं, और मेरे पास कुछ नहीं

और किसी गुरु के पास कुछ हो मुझे पता नहीं। मेरे पास सिवाय सतज्ञान के, जो मैंने समझा और शुभ भावना के और कुछ नहीं। मानों या न मानों।

सब को राधास्वामी

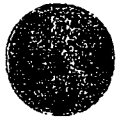

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज

मकान नं० 3024 सेक्टर 28 डी चण्डीगढ़

दिनांक 5-6-77

राधास्वामी ! दोस्तो, भाईयो, बहनों, वीरो, माताओ, मैं क्यों आया ? मैं यह हमेशा अपनी आत्मा से पूछा करता हूं कि तूने यह मकड़ी का जाल क्यों बनाया ! मैं ईश्वर, परमात्मा, राम को मिलने निकला था। मेरा कर्म या मौज मुझे दाता दयाल के चरणों में ले गई। उन्होंने मुझे यह संतमत दिया। उनकी बानियां पढ़ीं। जिस खुदा को आज दिन तक सारी दुनियां मानती है सब उसको पूजते हैं मगर यह राधास्वामीमत या संत उस खुदा को नहीं मानते। वह दुनियां के पैदा करने वाले को काल कहते हैं, निर्दयी कहते हैं, ज़ालिम कहते हैं। मैं राम, कृष्ण, देवी देवताओं को मानने वाला था। अब तुम सोचो जो इनको मानने वाले

को यह तालीम दी जाये कि दुनियां के पैदा करने वाला ज़ालिम है, काल है, निर्दयी है तो वह या तो उनक. विरोध करेगा, या संत मत वाले जिसको मानते हैं उसको ढूंढेगा। राधास्वामी वाले मालिके कुल कहते हैं। दाता दयाल जी ने भी मुझे यही लिखा :—

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक,
ईश ब्रह्म नहीं जानूं।
मैं फकीर का नाम दिवाना,
सब से बढ़ कर मानूं।

कबीर क्या कहता है, 'संतो आवे जावे सो माया'। तो इस राज़ को समझने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया। हम अपने स्वाद के लिये अपनी खुशी के लिये, अपनी काम चेष्टा पूरी करने के लिये, बच्चे पैदा करते हैं। जो बच्चा पेट में आता है, पैदा होता है, बड़ा होकर कोई बीमार होता है, कोई टी, बी से मरता है, कोई नालायक निकलता है। तो जैसा वह खुदा, दुनियां को बनाने वाला ज़ालम है, क्योंकि उसने हमको बनाया है, हमभी ज़ालम हैं।

संत कहते हैं वह जो असली मालिक है, वह न आता है न जाता है। मैंने उस मालिक की तलाश में सारी उमर खो दी। क्योंकि मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा यह मेरा अपना कर्म भोग है। मैं किसी पर कोई एहसान नहीं करता। दूसरे दाता दयाल जी का हुक्म था कि तालीम को बदल जाना। हम जिस दुनियां में रहते हैं, यहां कोई सुखी नहीं। किसी के पास दौलत नहीं है, किसी का बच्चा बीमार है, किसी की पति से नहीं बनती, भाई से नहीं बनती। यह तमाम दुनियां है क्या ? दुखों का घर है। तो मैं सन्तों की बाणी को मानने के लिये मजबूर हूं कि वह दुनियां को बनाने वाला ज़ालिम है जिसने हमको अपने रूप पर बनाया। हम आ गये, जो गुण उसमें थे वह हम में आ गये। उसने भी अपने संकल्प से दुनियां बनाई। हम भी अपने संकल्प से अपनी दुनियां बनाते हैं। उसके संकल्प का नतीजा देखो। बाढ़ें आती हैं, जानवर मर जाते हैं, आदमी मर जाते हैं, घर बह जाते हैं, क्या कुछ तबाही नहीं होती, अपनी २ ज़िन्दगी को Study करो, तुम्हारे साथ जो कुछ गुज़रती है। आज जवानी है कल

बुढ़ापा आयेगा। आज सुख है, कल दुःख होगा। कोई सुख ऐसा नहीं जिसमें तबदीली न आये। आज अमीरी है कल को गरीबी आयेगी। यह ससार ऐसा ही है। मेरे अन्दर यह सवाल पैदा होता है कि संतों ने जो मालिके-कुल का ईष्ट दिया, क्या उस मालिके कुल के ईष्ट को मानने से यह तमाम दख दूर हो सकते हैं ? हाँ। यदि किसी को सच्चा, और असली नाम मिल जाये। सन्तों का मार्ग नाम है, वह नाम मुझको तुम लोगों से मिला। दाता दयाल ने राधा-स्वामी नाम और गुरु स्वरूप का ध्यान 1905 में मुझे बताया था। शब्द योग बताया। मगर वह नाम मुझको नहीं मिला। अगर मिल जाता तो मैं इतनी मेहनत न करता। जिसको नाम मिल जाता है उसे मेहनत, कोशिश, करने की कोई जरूरत नहीं होती। यह नाम की महिमा है। इस वक्त कितने गुरुमत हैं। कोई कहता है राम राम नाम है, कोई कहता है अल्लाह हूं नाम है, कोई कहता है पांच नाम है, कोई कहता है राधास्वामी नाम है। मेरे तजुर्बे में यह आया है कि इनमें से कोई भी नाम नहीं है, क्योंकि इन नामों के जपने से अगर वह चीज मिल

जाती। तो मैं तो मुद्धत से ज़बान से राधास्वामी रटता रहा, तो वह चीज़ मुझे भी मिल जाती। तुम में से कितने हैं जो पांच नाम का सुमिरन करते हैं, अल्लाह हू का करते हैं। क्या तुमको दुनियां में दुःख नहीं व्यापता। यह सवाल मैं अपनी आत्मा से करता हू। मैंने नाम को क्या समझा? नाम वह अवस्था है जहां जो हमारे अन्तर चैतन शक्ति है इसको कोई दुख, कोई सुख, कोई फिकर, कोई ग़म, कोई चिन्ता महसूस नहीं होती। उस अवस्था का नाम, "नाम" है। अगर केवल राधास्वामी, राधास्वामी, ज़बान से रटने वाला नाम होता, अगर शब्द सुनना ही नाम होता, तो मैंने तो बसरा बगदाद में बड़े २ शब्द सुने, वीनें सुनी, प्रकाश देखे, रारंग सारंग सुना, तो क्या इतना कुछ होने के बाद मुझे चिन्ता नहीं आई? क्या मुझको फिकर नहीं आया? क्या मैं कामी नहीं हुआ? क्या मुझको लालच नहीं आया? यह ठीक है अगर मैंने काम भोगा तो अपने घर से बाहर नहीं गया, अगर मैंने लालच किया तो मैंने उचित लालच किया है, इसको तो मैं मानता हूं। मगर यह आये ज़रूर। अब इस उमर में अपनी आत्मा से पूछता

हूं कि तू लोगों को बताता है मगर तुम बताओ, तुम को वह बाम मिल गया जिसके मिलने से दुःख सुख नहीं व्यापता ? उस नाम की प्राप्ति मुझे आप लोगो से हुई । यही बात दाता दयाल ने कही थी जब मैं उनको तंग किया करता था । इस राज़ को पाने के लिये १९९८ में उन्होंने हुक्म दिया था कि फकीर हुकम मानो । तुमको सच्चा सत गुरु सतसंगियों के रूप में मिलेगा और तेरा बेड़ा पार करेगा । क्योंकि तुम में सच्चाई है, हो सकता है ९९ ऐब तुम में हों, मगर यह एक सच्चाई तुम को पार ले जायेगी, और दूसरों को भी पार ले जाओगे । तो जब से मुझे यह ख्याल आया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न मुझे कोई पता होता है । मेरा रूप लोगों के अन्दर प्रकट होता है और मैं नहीं होता तो मैं मजबूर हो गया इस बात को मानने के लिये कि मेरे अन्दर जितने ख्याल, शक्लें, शब्द प्रकाश, जो कुछ भी प्रकट होता है यह असलीयत नहीं है यह माया है और ख्याल भी आता, और जाता रहता है, तुम्हारे अन्दर कोई रूप आ जाता है फिर चला जाता है, शब्द आता है फिर चला जाता है । तो

यह सब है क्या ? सब माया है। तो वह कौन सी चीज़ है जो न आती है न जाती हैं ? उसको मैंने खोजा मगर उसमें अभी तक मुझसे ठहरा नहीं जाता। यह वह चीज़ है जो मेरे अन्दर शब्द को सुनती है, प्रकाश को देखती है, रूपों को देखती है और उनकी साक्षी है, वह तुम हो। हमने उस रूप को बिसार कर जो कुछ हमारे अन्दर ख्याल, विचार पैदा होते हैं इन को हमने सच कर माना है। तो जब तक हमारे अन्दर जो रूप रंग प्रगट होते हैं इनको सच मानते रहेगें। हमें नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती। स्वामी जी कहते हैं। "तुमने तो जगत को सच कर माना कैसे पाओ नाम निशान"। यह जो बाहर का जगत है यह तुम्हारा जगत नहीं है। यह उसका जगत है कर्ता पुरुष का, ईश्वर का, जो ज़ालम है जिसने दुनियां बनाई है। हमारा जगत अन्तर के तमाम ख्याल हैं, विचार हैं, भाव हैं तुम अपने ही विचार से दुखी हो जाते हो और तुम अपने ही ख्याल से सुखी हो जाते हो। तो जब तक कोई आदमी अपने तमाम ख्यालात को, जो उसके अन्दर प्रकट होते हैं उसको यह विश्वास नहीं हो जाता कि यह माया है,

हैं नहीं, तब तक तुम को शान्ति नहीं मिल सकती और न उस मंजिलें मकसूद पर पहुंच सकते हो। मैं यह कहना चाहता हूं कि कोई आदमी चाहे किसी बड़े से बड़े को गुरु मान ले, खुदा मियाँ को मान ले, किसी को मान ले, जब तक किसी को यह पक्का यकीन नहीं आयेगा कि जो कुछ मेरे अन्दर प्रकट होता है यह माया है और कल्पना है है नहीं। इस का सबूत मैं देता हूं कि लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट होता है मगर मैं नहीं होता। तो जो रूप उनके अन्दर प्रगट हुआ वह कौन हुआ? वह जगत मिथ्या हैं यह जगत मिथ्या नहीं है। यह जो जगत तुम देख रहे हो चन्डीगढ़ है, जमीन है, आसमान है, चांद है. यह मिथ्या नहीं हैं। अगर यह मिथ्या होंगे तो उस भगवान के लिये होंगे जिसने यह दुनियां बनाई है। हमारे लिये मिथ्या नहीं है। हमारे लिये वह मिथ्या हैं जो हमारे अपने ख्याल हैं और इसी ख्याल को लेकर संतों ने वेदांत को काल मत में रखा है। वेदान्ति कहते हैं यह दुनियां नहीं है। वे भूल में हैं. दुनियां क्यों नहीं, दुनियां है, मुल्क हैं सूरज है, चांद सितारे हैं। कितने

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

युग आये हैं, सतयुग है, त्रेता है, द्वापर है कैसे कह सकते हैं दुनियां नहीं है। यह उनकी नासमझी है। दुनियां अगर नहीं है तो तुम्हारी दुनियां नहीं है। जो तुम अपनी बनाते हो। यही बात कबीर ने धर्म दास को कही है।

चल हंसा सत लोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो।
एहि संसार काल है राजा, करम को जाल पसारा हो।
चौदह खंड बसै जाके मुख, सब को करत अहारा हो।
जारि बारि कोइला करि डारत, फिर फिर दे औतारा हो।
ब्रह्मा बिस्नु सिव तन धरि आये, और को कौन बिचारा हो।
सुर नर मुनि सब छल छल मारिन, चौरासी में डारा हो।
मद्ध अकास आप जंह बैठे, जोति सबद उजियारा हो।
सेत सरूप सबद जंह फूले, हंसा करत बिहारा हो।
कोटिन सूर चंद छिपि जैहै, एक रोम उजियारा हो।
वही पार इक नगर बसतु हे, वरसत अमृत धारा हो।
कहै कबीर सुनो धर्मदासा, लखो पुरुष दरबारा हो।

मैं यहां पाँचवा सतसंग दे रहा हूं यह आखरी सतसंग है। मैं चाहता हूं जितना मैंने यहां कहा है इसको किताबी शक्ल दी जाये। इसका नाम मैं

रखना चाहता हूं "चण्डीगढ़ में अमृत वर्षा"। आज आखरी सतसंग है इसलिये मैं बात कह रहा हू। धर्म दास वह है जिसने अपनो सारी जायदाद साधुयों में बांट कर कम्बल लेकर गुरु के द्वार पर आया था। अगर दुनियां को छोड़ने का अर्थ दौलत को छड़ोना ही होता तो कबीर उसको यह बात क्यों कहता ? बाहर का धन छोड़ने से, बाहर की कम्बली पहनने से साध बनने से तुमको नाम नहीं मिलेगा। नाम मिलेगा अगर गुरु के द्वारा तुमको यह यकीन हो जाये कि जितनी तुम्हारे अन्दर फुरनायें फुरतीं हैं यह तुम्हारा संसार है। संसार किसे कहते हैं ? सम और सार। सम कहते हैं बरावर को, सार कहते हैं असलीयत को। सार वस्तु तुम्हारे अन्दर क्या है ? मेरे अन्दर क्या है ? उसका मुझे तुम लोगों से पता लगा। जब मैं तुम्हारे अन्दर नहीं जाता। तो, जो कुछ मैं अपने अन्दर देखता हूं वह भी कल्पित है और जो चीज इसको देखती है वह सार वस्तु है। तो उसके सामने जो कुछ भी आता है, रूप आते हैं, रंग आते हैं जबान से सुमिरन आता है ध्यान आता है, तुम्हारे स्वपनें आते हैं. तुम्हारा आनन्द आता है, वह

तुम्हारा संसार है। मैंने यह काम किसी ध्येय के लिये किया है। किनके लिये है? जो सचमुच संतमत में शामिल होते हैं और इस ख्याल से होते हैं कि हमारा आवागमन चला जाये। हम अपने घर चले जायें। आज एक आदमी मुझ से मिला। बड़ा खुश था। कहने लगा महाराज, मेरी लड़की के लड़का हुआ है। बड़ा खुश था, मैं बड़ा हंसा। मैंने कहा तुम ७० साल के हो गये। अगर तुमको लड़की के लड़का होने से खुशी है, तो तुम आवागवन से बच नहीं सकते। तुम भूल में हो तुम्हारे पोता हो गया, तुम खुशी मनाते हो और तुम यह उम्मीद रखो कि तुम्हारा आवागमन समाप्त हो जाये यह नहीं हो सकता। बच्चों के लिये और तालीम, औरतों के लिये और तालीम, बूढ़ों के लिये और तालीम, जवानों के लिये और तालीम। मेरे जिम्मे डियूटी थी। मैं चाहता हूं संसार को सच्चाई बता जाऊं कि असलीयत क्या है, गो, जो मैंने समझा है मैं उसका दावा नहीं करता। क्योंकि जो मैंने समझा है बाणी उसको ठीक सिद्ध करती है इसलिये मुझे खुशी है कि मेरा अनुभव गलत नहीं है। इसलिये मैं कहता हू इस वक्त जितना गुरुईज्म है इसने हम लोगों को

सच्चाई खुले शदों में ब्यान नहीं की और उनका भी कोई कसूर नहीं। हम संसार से छुटकारा पाने के लिये तो सन्तों के पास नहीं जाते। हम तो बच्चे के लिये, बीमारी से छुटकारे के लिये, ऐसी २ बातों के लिये सन्तों के पास जाते हैं। अरे दीवानों ! बच्चे का होना या न होना बीमारी का होना या न होना यह तो तुम्हारे कर्मों का फल है। यह फकीर चन्द है, यह बीमार था इसने रात के ३ बजे होशियारपुर अपने भाई को टैलीफोन किया। वह मेरे पास आया। मुझे बताया। मैंने प्रसाद कर दिया और लिख दिया कि 10 दिन में तुम ठीक हो जाओगे और वह 10 दिन में ठीक हो गया। अब चूंकि जो कुछ मैंने कहा था वह ठीक हो गया इसलिये वह मेरे पीछे २ फिरता है। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं फकीर चन्द ! तूने यह कैसे कह दिया कि यह दस दिन में ठीक हो जायेगा। ऐसा ही एक केस है, एक व्यक्ति है उसका लड़का बीमार था मैंने देखा और लड़के के बाप को कहा कि मेरा इलम कहता कि दस दिन में ठीक हो जायेगा। अगर ठीक न हुआ तो यह मर जायेगा। अब वह घबराया। भागा और ज्योतिषि वशेश्वर

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

नाथ के पास गया और कहा कि बाबे ने ऐसे कहा है। उसने उसका टेवा देखा और कहा मारकेश आया हुआ है। क्योंकि पूरा नहीं है इसलिये वह ठीक हो जायेगा और वह ठीक हो गया। अब मैं सोचता हूं कि तू फकीर चन्द! अगर कोई बात कह देता है तो वह पूरी क्यों हो जाती है? यह सवाल है। इसका जवाब पहले मेरे पास नहीं था। अब आ गया कबीर का शब्द है।

"सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, उसके हृदय आप।"

मैं चूंकि सत्य प्रिय हूं। आप लोग यह समझते हैं कि जो आदमी सच बोलता है वह सच्चा है। यह झूठ बात है। जो हमेशा सच बोलने वाला है वह यथार्थ सत्यवादी नहीं है। सत्यवादी वह है जो अपने अन्तर में आपने रूप का ज्ञान रखता है और अपने रूप में रहता है और जो उसके अन्दर फुर्नायें फुरती हैं उनको माया समझ कर उसमें लंपट नहीं होता, ऐसे आदमी को सत्यवादी कहा जाता है। वह है सत पुरुष। सच कहने वाला सत पुरुष नहीं है। यह

एक राज़ है जिसको आज तक किसी महात्मा ने नहीं बताया। तो ऐसे आदमी के मुंह से जो कुछ होने वाला है वह स्वाभाविक निकलता है। यह नहीं कि वह करता है। तुम भूल में हो। अगर कोई गुरू इस तरह कर सकता होता तो वह अपनी बीमारी को ठीक कर लेता। अपने पुत्रों को ठीक कर लेता। इन भूल भलाईयों में और अज्ञान में दुनियां लुट लई। हम को असलीयत का पता नहीं है। हम गुरु के रूप को नहीं समझते। हम यूंही गुरुओं के पीछे २ घूमते फिरते हैं। गुरु नाम है समझ का, ज्ञान का, विवेक का! मेरा यह आखरी सतसंग है मैं सच्चा ज्ञान दिये जाता हूं। खास कर उनको जिन्होंने मुझको यहां बुलाया है। एक डियूटी है। मैंने जो समझा वह कहता हूं यही कबीर कहता है।

चल हंसा सत लोक हमारे छोड़ो यह ससांरा हो।

अब यह मैं सोचता हूं कि सन्तों ने जो यह कह दिया कि दुनियां को पैदा करने वाला ज़ालिम है। आया यह ठीक है? अब अकल मानती है कि ठीक है और हम भी ज़लिम है। वर्षा होती है, खेती होती है, करोड़ों कीड़े पैदा होते हैं और हम डी. डी.

टी डालते हैं कि नहीं डाते ? तुम्हारे अन्दर मलेरिया के कीड़े आ जाते हैं क्या हम दवाई लेकर उनको मारते नहीं हैं ? मैंने महाबीर जयन्ती पर यही भाषण दिया था कि अहिंसा परमोधर्मः प्राकृतिक धर्म नहीं हैं। यहाँ तो अहिंसा और हिंसा दोनों चलते है। यह काल की सृष्टि है। यह बना हा ऐसा है। तो सन्तों ने इसकी खोज की और जो इससे बचना चाहते थे, और जो हमेशा के लिए दुःखों से बचना चाहते हैं उनके लिये संतमत है। गुरुओं ने तुमको नाम दे दिया मेरी समझ में नहीं आया उन्होंने क्या किया। उन्होंने आपको नाम नहीं दिया उन्होंने अपने डेरे, अपने मान अपनो इज्जत, अपने धाम और अपने मन्दिर के लिये तुमको नाम दिया ताके तुम हर हमीने आते रहो, और कमाई का दसवां हिस्सा देते रहो। दुनियां नाम की अधिकारी नहीं है। दुनियां में दो मार्ग है। प्रवृति और निवृति मार्ग सन्तों का मार्ग निवृति मार्ग है और यह उस वक्त आता है और है किसके लिये ? सच पूछते हो।

राधास्वामी नाम जो गावे सो तरे,
कल क्लेश सब नाश सुख पावे सब दुख परहरे।

यह नाम उनके लिये है। कलयुग के क्लेश दूर करने के लिये। क्या मौतें सतयुग में नहीं होती थी ? बीमारीयें नहीं होती थी ? कंल युग कहते है, अकल ज्यादा जब बढ़ जाती है इन्सान अपनी अकल से अशान्त हो जाता है। उसको शान्ति देने के लिये इस कलयुग में नाम है। जो आदमी सुखी है उनको इस नाम की कोई ज़रूरत नहीं, और जो दुनियां को नाम देते हैं वह ग़लती खाते हैं। मैं नाम नहीं देता। क्यों नहीं देता ? दुनियां नाम की अधिकारी नहीं है। जो जिस चीज़ का अधिकारी होता है उसको वह चीज़ बता देता हूं। मैंने बच्चों को कभी नहीं कहा, तुम निवृति मार्ग पर आओ। बच्चों को कहता हूं दुनियां में तरक्की करो, फलो, तजुर्बा करो, जब दुनियां का तजुर्बा हो जाये तब आना नाम की तरफ। यह ग़लत तालीम है। दाता ने कहा था तालीम बदल जाना। मैं आज निर्भय हो कर यह कहता हूं। अगर मैं ग़लती पर हूं तो दूसरे महात्मा मेरा खंडन करें मुझे कोई दुःख नहीं। हम लोगों को ग़लत तालीम दी गई। राधास्वामीमत की वाणी को

पढ़ो ! कितना वैराग्य है। पिता कोई नहीं माता कोई नहीं, भाई कुछ नहीं, बेटा कुछ नहीं। जब स्वामी जी गुज़रने लगे तो राय साहिब को बुलाया और कहा मैं सत लोक को जा रहा हूं मेरे बाद जिस तरह मेरी सेवा करते थे उसी तरह मेरी औरत की सेवा करना। यह लिखा हुआ है। कोई इन्कार नहीं कर सकता। अब मैं पूछता हूं उनका वैराग्य जो कुछ उन्होंने किताबों में छांटा, स्त्री कोई नहीं, धन कुछ नहीं, बेटा कोई नहीं, क्या वह स्त्री केप्रेम से, स्त्री को सुख देने से बरी थे। कोई जवाब दे मुझको। गुरु लोग जायदादें बनाते हैं, अपने बच्चों को अपने पोतों को, अपने रिश्तेदारों को दे जाते हैं। क्या वह बरी हैं। क्या उन्होंने ग़लत कहा? नहीं। मैं दाता दयाल के पास गया और कहा महाराज, आप अपनी धाम किसी शहर में बनाते तो बहुत रौनक होती! आपने ऐसी जगह बनाई जहां कोई गाड़ी आदि नहीं आती। उन्होंने कहा-फकीर, मेरे गांव के लोग, रिश्तेदार ग़रीब हैं। यहां सतसंगी लोक जो पैसा देते हैं, मैं उससे इनका पेट पालता हूं। कितनी साफ बात उन्होंने कही। मैं यह नहीं कहता कि औरत को छोड़

दो मैं कहता हूं तुम औरत के, बच्चों के, और घर के रूप को समझ जाओ। जब तक जीवन है, तुम मजबूर हो। मैं बूढ़ों को कई बार कहता हूं कि तुम अपनी सारी जायदाद, अपनी औलाद को मत दे जाओ। मर जाओगे उनको चली जायेगी ? आज कल दुनियां में कोई किसी का नहीं। मेरा यह मतलब नहीं। मैं आपको कहता हूं असली नाम है क्या ! असली नाम केवल यह है कि आपको यह ज्ञान हो जाये, अनुभव हो जाये, कि अन्तर में जितने ख्यालात उठते हैं, सिर्फ माया है। सूक्षम प्रकृति है और कारण प्रकृति है। हम जो हैं उसके साथी हैं हम किसी के आधीन नहीं। हम आज़ाद हैं। क्योंकि हम इस में फंसे हुये हैं इस लिये गुरू की ज़रूरत होती है। और गुरू कोई कामल पुरुष होना चाहिये। आप लोग आये हैं, मेरा यह आखरी सतसंग है पुराने सतसंगी जो बुढापे में हैं उनसे कहता हूं। अब निचली Stages को छोड़ दो। अगर तुम सहसदलकमल में ध्यान करते हुये मरोगे, त्रिकुटी में ध्यान करते हुये मरोगे, सुन्न में मरोगे, तुम्हारा आवागमन नहीं छूटेगा, क्योंकि तुम्हारे सामने जो दृश्य आते हैं तुमने उनको सच माना हुआ

है। दुर्गा दास। तुमने मेरे साथ प्रेम निभाया है 1919 से। क्योंकि मैं अज्ञानी था मुझे पता नहीं था। अब जो कुछ समझ में आया हृदय को शुद्ध करके साफ करके उन सजनों को जो वर्षों से मेरे साथ लगे हुये हैं ध्यान किये जाता हूं। जो कुछ हमको मिलता है यह हमारे कर्म हैं। जिसने कुछ लेना है लेता है, जिसने तकलीफ देनी है देनी है, दुःखी नहीं होना चाहीये। मैं इसके विरुद्ध हूं। एक मार्ग तो यह है जो मैंने आपको बता दिया। नाम क्या है? नाम वह अनुभव है, ज्ञान है कि मेरा जो आत्मा है यह न तो शरीर है, न मन है न प्रकाश है और न शब्द है। मैं कौन हूं? अकह अगाध अनामी। जो इस रूप में रहता है उसमें यह स्वाभाविक शक्ति होनी चाहिये कि जो उसकी संगत में जाये या प्रेम करे उसको शान्ति मिलनी चाहिये, उसकी मनोकामनायें पूरी होनी चाहिये। अगर नहीं होती तो जिसका वह ध्यान करता है वह अधूरा है। अगर वह अधूरा नहीं है तो जो कबीर ने लिखा है कि सांच बराबर तप नहीं झूठ बराबर पाप, जिसके हृदय सांच है उसके हृदय आप, तो यह कबीर ने ग़लत लिखा, कबीर दोषी है, जिसने रोचक बातें लिख दी। जिस

तरह किसी महापुरुष ने लिख दिया, प्रभु सिमरन से दुश्मन टरे । मगर उनके रिश्तेदार ने उसके साथ दुश्मनी नहीं छोड़ी । इसके दो मतलब हैं या तो उस महात्मा ने प्रभु सिमरन नहीं किया जिससे उसका रिश्तेदार उससे दुश्मनी छोड़ जाता और या जो कुछ उन्होंने लिखा फर्ज़ी, रोचक, भयानक बातें लिख गये। हो सकता है कबीर ने भी रोचक और भयानक बातें लिखी हों । लोग क्योंकि मुझे यह कहते हैं कि बाबा ! आपके ध्यान से यह हो जाता है, वह तो जाता है । मेरे ज़िम्मे एक ऋण था, डियूटी थी मैं अपनी आत्मा से पूछता रहता हूं कि तुझे पता होता है कि फलां का काम हो जायेगा ? वह चीज़ स्वाभाविक मेरे दिमाग़ से निकलती है। क्यों निकलती है ? 'जिसके हृदय सांच है जिसके हृदय आप' । मैं इस लाईन पर शत प्रति शत Practical नहीं हो सका । अगर कबीर का यह कहना ठीक है और अगर जो कुछ मैंने सच को समझा है, सच में कोन रहता है ? जो कुछ मैंने व्यान किया अगर वह ठीक है तो मेरा ध्यान करने वालों को शान्ति मिलनी चाहिये । मनोकामना पूरी होनी चाहिये । यदि नहीं होती तो कबीर साहिब की ग़लती है जिन्होंने झूठ लिख

दिया। दुनियाँ को अपने जाल में फंसा गया। मैं बड़ा निर्भय आदमी हूं। इन सन्तों ने हमको सच्ची बातें नहीं बताईं। हर एक मजहब ने अपनी बढ़ाई की। जब ब्राह्मणों का राज्य था तो ब्राह्मणों की गुड्डी चढ़ी हुई थी। अब गुरुओं का राज्य है अब उनकी गुड्डी चढ़ी हुई है। कहते हैं जिस वृक्ष की दातन कोई लाकर सन्त को दे देता है उस वृक्ष को मनुष्य का चोला मिल जाता है। क्या सबूत है इन बातों का? ऐसी २ बातें बना कर के इन गुरुओं ने हम लोगों को लूटा है। अगर मैं स्वाभाविक तौर से कोई बात कह देता हूं वह हो जाती है। अगर सच मुच मुझ में करने की ताकत होती तो मैं अपनी औरत की बीमारी को ठीक कर लेता। मैं जब बीमार हुआ तो P. G. I. में Check up कराया। मेरे जिम्में डियूटी थी तालीम को बदल जाने की, मैं सच्चाई ब्यान किये जा रहा हूं। जो कुछ मेरी समझ में आया वह कहा कोई दावा नहीं। तो यह सिद्ध हो गया कि संत के मुंह से वह बात निकलती है जो होने वाली होती है। मैं अपने आप से पूछता हूं कि तुम कैसे कह देते हो? मुझे खुद

पता नहीं होता स्वाभाविक मेरे मुंह से जो बात निकलती है पूरी होती है। मिथ कर मैं कुछ नहीं कहता। आपने मेरी बड़ी सेवा की है। मैंने 122 रुपया की रसीद मन्दिर के लिये अपने पास से काट दी है। जो भी दवाईयां आपने मुझे मुफत दी उनके 122 रुपये की इसीद मन्दिर के नाम काट दी है। हां अगर मेरे पास न होते तो मैं दुर्गा दास को कहता कि तुम दे दो। क्योंकि यह पहले भी 40 रुपये महीना भेजता है क्योंकि मेरा गुज़ारा नहीं चलता। यह ठीक है मगर मैं किसी को धोखा नहीं देना चाहता। तो काज मैं यह कहना चाहता था कि मैं संतमत में क्यों आया? मुझे संतमत से क्या मिला? मुझे संतमत से यह मिला कि मेरे मन के अन्दर जो ख्याल उठते थे कि हाय यह न हो जाये, वह न हो जाये वह खत्म हो गये। किसने खत्म किये? दया मेरे दाता दयाल की है और तुम लोगों ने खत्म किये, केवल एक ख्याल ने कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। मेरी ज़िन्दगी का तख्ता पलट गया। यही एक राज़ था जिसको पर्दे में रखकर हम इन्सानी नसल को मजहबों, फिरकों, पंथों में बाँटा गया। अब अपना राज है।

कबीर के समय में मुसलमानों का राज था। स्वामी जी के वक्त में अंग्रेजों का राज था। अब अपना राज है। इस वक्त भारत वासियों की मजहबी एकता की ज़रूरत है और जीने के राज़ की ज़रूरत है। इसलिये क्योंकि मेरे जिम्में डियूटी है।

'तेरा रूप है अदभुत, अचरज तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही"।

इसलिये मैंने इस राज़ को खोला। अगर यह बात समझ में आ जाये तो तुम्हारी अपनी मर्ज़ी है जिसको मरज़ी पूजो। राम को पूजो, कृष्ण को पूजो मुहम्मद को पूजो, नानक साहिब को पूजो, राम भी तुम्हारा अपना विश्वास है और मुहम्मद भी तुम्हारा अपना विश्वास है। इसामसी भी तुम्हारा अपना विश्वास है। बाहर से आकर कोई मुहम्मद, कोई इसामसी, या बाबा सावन सिंह या कोई और फकीर तुम्हारी मदद नहीं करता। अगर महर्षि जी मदद करने वाले होते तो अपनी धाम को उजड़ने न देते। यह सब कुछ तुम्हारा अपना विश्वास है, तुम्हारी अपनी श्रद्धा है और अपना यकीन है और

यही मैं कहना चाहता हू । इसलिये मैं यह सर दरदी करता हूं कि इन्सानी नसल को सच्चाई का पता लग जाये । मगर आप लोगों को सच्चाई की ज़रूरत नहीं है । आपको तो दुनियां के सुख चाहिये और इससे मैं भी बरी नहीं । अगर मैं यह कहूं कि मुझे धन नहीं चाहिये, मुझे सुख नहीं चाहिये, तो यह बकवास है, धोखा है । तो इसके लिये क्या करना है ? "इन्सान बनो" । तुम्हारे ख्याल में ताकत है । आज मैं भाग्य-शाली हूं मेरी तालीम का असर इस डोगरा फैमली पर बहुत पड़ा है । फकीर चन्द है, भाईयों की मदद करता है । उनका इससे प्रेम है । दु:ख सुख में एक दूसरे की मदद करते हैं । यही कुछ ले जाना है । वजाये इसके कि अपनी दौलत किसी गुरु के हवाले करो । अगर तुम्हारे पास चार पैसे हैं तो पहले उनकी मदद करो जो तुम्हारे अपने रिश्तेदार हैं, गरीब हैं, उनकी मदद करो । यह है मेरी तालीम । मुझे दाता ने कहा था तालीम बदल जाना । हमने पब्लिक की सेवा करनी है । जिसको कुदरत ने तुम्हारे साथ लगाया है उनकी मदद करो । मगर जमाना ऐसा है जो मदद लेते हैं वह घूरते हैं,

आंखे भी दिखाते हैं अपमान भी करते फिरते हैं। लड़कियां हैं आज कल मेरी लड़की है। मैंने कभी उसको नहीं बुलाया। मैंने उसे कह दिया है बेटी मैंने तेरी शादी कर दी मेरे पास देने के लिये कुछ नहीं। साफ इन्कार करता हूं। लड़कियों का क्या हक है? अगर बाप के पास कुछ है तो खुशी से जो इच्छा दे। लड़कियों का मां बाप से माँगने का कोई हक नहीं है। यह पाप है। लड़का नौजवान हो गया है। उसका कोई हक नहीं कि बाप की कमाई खाये। हर मनुष्य को कमा कर खाना चाहिये। आज कल घरों में मुसीबतें हैं, क्यों ? भाई भाई पर निर्भर है। लड़का बाप पर निर्भर है। वह बाप जिसके पास है फिर भी वह लड़के से पैसा लेता है वह बाप दोषी है। अगर नहीं है तो बाप का हक यह है कि अपनी रोटी, बीमारी, कपड़े, मकान का रहने के लिये खर्च ले। अगर इससे ज्यादा उम्मीद रखता है तो बाप दोषी है। लड़कों से लेकर बाबे फकीर को दान देना जुर्म हैं। मेरी यह तालीम है। मैं कैसे मानूं इन सन्तों ने अपने परिवार को पाला। गद्दियां अपने बच्चों को दे गये। यह है क्या

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

हम लोगों को बेवकूफ बनाया गया है। मैं आया हूं अनामी धाम से अवतार लेकर केवल तुम गृहस्थियों के लिये कि इन मजहब वालों ने सन्तों ने हमको बेवकूफ बनाया है। किसी ने सच्ची बात हमको नहीं बताई। यह कहना चाहता हूं निर्भय होकर। अगर मैं ग़लत हूं तो यह मजहब वाले, पंथ वाले, मेरा विरोध करें। मुझे कोई दावा नहीं। मैं जब देखता हूं इन महात्माओं ने पैसा इकट्ठा करके अपने एयर-कंडीशन कमरे बनाये और अपने बच्चों को दे गये तो मैं कैसे मानूं। मत लुटो आज कल के गुरुओं के पीछे। तुम ग़लती पर हो तुमको कोई सच्ची बात नहीं बताता। मैं सच्चाई पसन्द इन्सान हूं। अगर मैं ग़लती पर हूं तो मुझे बताओ यह जो गुरु गद्दी पर बैठे हैं यह मुझे कसम से बतायें। इन्होंने बीने सुनी हैं, इन्होंने रारंग-रारंग सुना है, यह मुझे कहें आत्मा को सच्चा बना के, किताबों का हवाला न दें। अब मैं हूं, चाहे मैं कितना भी ज़ोर मारूं, मैं घन्टा, शंख बीन नहीं सुन सकता। क्योंकि मेरी वह Stage गुज़र गई। तो जिस व्यक्ति को ज्ञान हो जाता है उसके लिये यह ज़रूरी नहीं कि

वह शुरू से अ, आ, इ, ई पढ़े। अच्छे दिमाग़ वाले के लिये सतसंग में जाकर अभ्यास सोहंग से परे से शुरू करे। हां अगर दुनियां चाहते हो तो निचली Stages का अभ्यास ज़रूर करो। अगर नहीं करोगे तो तुम्हारी दुनियां नहीं बनेगी। तुम्हारी दुनियां को बनाने वाला तुम्हारा संकल्प है, मन है। जो आदमी मन को छोड़कर ऊपर रहता है, परवाह नहीं करता, उसकी दुनियां नहीं बन सकती क्योंकि वह मन से ऊपर रहता है। दुनियां का सम्बन्ध तुम्हारे मन से है। आम गृहस्थियों के लिये सन्तों ने पांच नाम का सुमिरन बताया है ताके तुम्हारी दुनियां बन जाये। बिल्कुल सच्ची बात और निर्भय होकर कहता हूं। दुनियां चाहते हो तो सहसदलकमल में ध्यान करो। मूर्ति का ध्यान करो। मैं नहीं कहता कि मेरा ध्यान करो। जिस इच्छा को लेकर तुम ध्यान करोगे वह तुम्हारी इच्छा पूरी होगी कोई रोक नहीं सकता। जितनी तुम्हारी Concentration होगी उतना तुम्हारा काम हो जायेगा। यह मैं क्यों कहता हूं। मैं कई लोगों को नहीं जानता। वह मेरा ध्यान करते हैं। उनके काम हो जाते हैं और Credit मुझे देते हैं।

मुझे कुछ पता नहीं होता। बात क्या है? तो मैं इस नतीजे पर आया कि ऐ इन्सान! तुझको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारी वासना की Concentration से मिलता है, तुम्हारी एकाग्रता से मिलता है, यह नहीं कि कोई गुरु तुमको फूंक मारकर दे देता है। तुम भूल में हो, तुमको जो कुछ मिलता है तुम्हारे ध्यान से मिलता है। यह चन्दो है, यह मुझ पर विश्वास करती है। इसके सब काम होते रहते हैं। अब अगर मैं इसके घर का खा जाऊं तो मैं मर गया। आपने कपड़े दिये हुये हैं मैंने पहने हुये हैं। यह मैं नहीं रखूंगा। आपका प्रेम है। मैंने पहन लिये हैं। हम इन्सान हैं एक दूसरे पर निर्भर है, देते हैं लेते हैं। मगर धोखे से पैसा लेना पाप है। यह जो महात्मा गुजरे हैं अगर यह मरते समय सचमुच किसी को नहीं ले जाते थे और यह किसी के अन्तर प्रकट नहीं होते थे और फिर इन्होंने प्रचार करवाया कि वे जाते हैं तो इनमें सच्चाई कहां है। मैंने तो ऊंची सच्चाई की बात की हैं। यह तो यहाँ ही झूठे हैं। तो इनके ध्यान करने वाले को क्या मिलेगा। तुम्हारा कल्याण कैसे होगा?

कबीर के कहने के अनुसार जिसके हृदय साँच है उसके हृदय आप। जब मैं सच्ची बात तुम को नहीं बताता तो मैं तो उस तरीके से भी सच्चा न हुआ तो वह जो अपने आप में सच्चे बनना है वह तो बड़ी ऊंची बात है। तो मैं अपने जैसों को सच्चाई बताये जाता हूं। जो भेद के लिये आये हैं। यह के. सी.-जैन है इसने दस रुपये तार द्वारा मुझे एक दफा भेजे। एक दफा ग्यारह रुपये भेजे। क्यों भेजे ? यह कहता है मेरी बहन की शादी थी आप मेरे साथ रहे तीन दिन और शादी हो गई। तो इसने पूछा कि कोई सेवा बताओ तो मैंने कहा ११ रुपये मनिआर्डर द्वारा मानवता मन्दिर भेज देना। *I am the incarnation of reality and truth* तुम लोगों को बिल्कुल धोखा नहीं देता। इसने ११ रुपये का *T.M.O.* भेज दिया। फिर यह गया अफगानिस्तान। वहां मैं उसके साथ रहा यह कहता है कि मैंने इसे ऊंची जगह पर बैठा दिया और जब चलने लगे तो मैंने कहा जैन, पांच हज़ार रुपये मन्दिर को भेज देना। यह कहता है मैंने कहा। इसने तीन हज़ार रुपये का चैक मन्दिर दिया। मैंने वह चैक वापिस भेज दिया और लिखा कि जैन जी,

मैंने तुमको पांच हज़ार रुपये भेजने के लिये नहीं कहा। मैं सतसंग दिये जाता हूं मेरी वह हालत है

"बेकदरां दी दोस्ती, तू क्यों कीती हंस।
मांस-मांस तेरा सोखां चढ़ गया गलियां रुल गये पंस"।

मैं वह राज़ बताये जाता हूं जो आज दिन तक किसी ने नहीं बताया। सैन बैन में बताया। अब मैंने इससे कहा कि मैंने तुमको रुपये भेजने को नहीं कहा। मैं तीन हज़ार रुपये तुमसे नहीं लेना चाहता वापिस करता हूं। इसने लिखा आप ने तो नहीं कहा। जो गुरु मेरे अन्तर रहता है उसने कहा। कुछ दिन हुये इसके अन्दर मेरा रूप प्रकट हुआ। उसने कहा होशियारपुर आओ और यह होशियारपुर आया और पचास रुपये वहां दे गया। अब तुम सोचो दोस्तो, मुझे कोई पता वहीं कहां मेरा रूप प्रकट होता है। मैं जानता हूं इस साफ बयनी से मैं मन्दिर की जड़ों में कुल्हाड़ी मार रहा हूं। मैं खूब जानता हूं दुर्गा दास! मेरी कोई इज्जत नहीं होगी। मुझे कोई नहीं पूछेगा। मैं जानता हूं यह गद्दियां वाले मेरे से दुश्मनी करेंगे। *I don't care for anything.* मैं तो दुनियां में आया ही इसलिये हूं।

तू तो आया नर देही में,
धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अग लगा कर,
ले जा गुरु के देसा।

मेरा यही नाम दान है जो मैं सतसंग में कहता हूं। मैं इन महात्माओं को हक देता हूं कि वह कहें मैं ग़लत कहता हूं। मैं कोई ठेकेदार हूं? दुनियां में जितना खेल है यह सब तुम्हारे मन का है, तुम्हारे विश्वास का है। इस मन के मते पर मत चला करो।

मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर सवार है, वह साधु कोई एक।

तुम्हारे अन्दर कोई रूप प्रकट होता है, चाहे वह बाबे फकीर का ही क्यों न हो, अगर तुम्हारा आत्मा शुद्ध है तो वह जो कोई बात कहेगा वह ठीक होगी। अगर तुम्हारी आत्मा शुद्ध नहीं है तो वह ग़लत भी हो जायेगी। मैंने बिल्कुल सच्ची बात आपको बता दी कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। मैं यह काम क्यों करता हूं? असली नाम क्या है? ऐ इन्सान।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

तेरा असली रूप परम-तत्व आधार है। तू न शरीर है और न मन है, तो यह नाम किसको मिलना चाहिये जो मैं देता हूं। दाता! तुमने काम दिया था, मैं कर चला, पता नहीं मैंने ठीक किया या ग़लत किया, मेरी नियत साफ है। किसी गुरु के विरुद्ध नहीं, किसी मज़हब के विरुद्ध नहीं, किसी पंथ के विरुद्ध नहीं, मैंने प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। कई कहते है बाबा! तुम गुरुओं के विरुद्ध बोलते हो। अरे बाबा। जिन सन्तों ने मेरे बजुर्गो, मेरे पराशर, मेरे वशिष्ट का जिस असूल के आधार पर खंडन किया तो उसी असूल के आधार पर अगर मैं मौजूदा गुरुओं के विरुद्ध कह देता हूं तो मैं पापी नहीं।

निज बैपारी नाम का, हाटै चलु भाई।
साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।
सार सबद कछु बस्तु है सौदा करू भाई।
भाव खुला पंच रंग का बहु करत दलाली।
जा के हाथ बिबेक है, करि देत सवाई।
पाप पुन्न पलरा भये, सूरत भई डांडी।
ज्ञान दुसेरा डारि के, पूरा करू आई।

करि सौदा घर को चले, रोका दरबानी।
लेखा दे निज नाम का, कहं का बैपारी।
पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जम सीस नवाई।
संत चले सत लोक को, छोड़ा संसारी
कुंदन भये दरबार में, प्रभु नजर गुजारी।
कहै कबीर बैठो सही, मिख लेहु हमारी।
काल कलप ब्यायै नहीं, रहै नफा तुम्हारी।

साधु सन्त इस नाम के हकदार हैं। तुम गृहस्थी इस नाम के हकदार हो कहां? सतनाम है क्या? तुम मेरा ज्ञान नहीं लेते। तुम्हें क्या फायदा? बिस्कुल सच्ची बात कहता हू मन्दिर में जो इच्छा है वह दो। नाम का सोदा कौन करता है? साधु और सन्त करते हैं। जिसके अन्दर बीन बजती है, प्रकाश होता है, बह नाम का अधिकारी है। बीन नाम नहीं है। ज्ञान है नाम शास्त्र कहते हैं ज्ञान बिना मुक्ति नहीं होती। यह नहीं कि तुम खुदा बन गये, ब्रह्म बन गये। मैंने क्या समझा? मैं क्या बना? वहां पहुंच कर यही हो गया है न, कि मेरे हृदय में सांच है।

जो बात मेरे मुंह से निकलती है ठीक हो जाती है। मेरे में इतनी ही शक्ति आई है न, मगर मैं अपनी ही बीमारी को तो दूर नहीं कर सकता। अपनी औरत की बीमारी को दूर न कर सका। मेरे से लोग प्रशाद ले जाते हैं, ठीक हो जाते हैं, मेरी औरत $7\frac{1}{2}$ साल बीमार रही मैं कुछ न कर सका। मेरे पास कई औरतें आईं जिनकी माहवारी बन्द हो चुकी थी, मेरे प्रशाद से उनके बच्चे हो गये, मेरी लड़की की शादी को २४ साल हो गये, कई दफा प्रशाद दिया बच्चा नहीं हुआ। मैं खुद बीमार हूं। *P. G. I.* में *Check up* करवाया है। अब मैं सोचता हूं बात क्या है? राज क्या है? *Seeret* क्या है? इस नाम से यह फायदा है कि इन्सान का मैंपना चला जाता है। मेरा चला गया? मैं वहां पहुंच गया तो मैं क्या कर सकता हूं? अगर मैं कुछ कह देता हूं वह मैं नहीं करता, वह तो होना होता है। तुम्हारा विश्वास करता है। मैं कुछ नहीं करता। तो मैं कौन हूं? मैं एक चेतन का बुलबुला हूं। एक तत्व है उसमें हिलोर होती है। उससे सब चांद, सितारे सूरज बनते रहते हैं। इससे मुझे क्या मिला? शान्ति। भूम चले गये। मरने के

बाद क्या होगा ? पता नहीं। चाहता हूं कि मरने के बाद कुदरत मुझको शक्ति दे तो मैं कह सकूं कि मरने के बाद मैं कहां गया। कबीर कहता है उस नाम का सौदा कौन करता है, सन्त और साधु।

साध संत गहकी भये, गुरु हाट लगाई।

वह नाम और है। वह नाम बीन नहीं, वह नाम रारंग सारंग नहीं। विवेक है तो सब कुछ मिलेगा, विवेक नहीं तो कुछ नहीं। मैं कर्म को मानने वाला हूं। जब मैं देखता हूं इन बड़े बड़े महात्माओं को अन्त समय बड़ी बड़ी तकलीफें हुईं, तो मैं डर गया। मैं कैसे मरूंगा मुझे नहीं पता। मुझे दुर्गादास ! यह खुशी है कि इस ज़िन्दगी में मैंने कोई पाप नहीं किया कोई हेराफेरी नहीं की। किसी को धोखा नहीं दिया।

निज बैपारी नाम का हाटै चलु भाई।

कौन समझता है इस बात को। मैं समझता हूं तुमने नाम जप लिया, सौदा कर लिया।

सार शब्द कछु बस्तु है, सौदा कर भाई।

जो आदमी इतना ऊंचा चढ़ जाता है कर्म भोग से वह भी बच नहीं सकता। उसको भी अपना

किया हुआ भोगना पड़ता है। यह मुझे दाता जी ने लिखा था।

"फकीरा जा भव सागर पारा"।

कर्म भोग सब को भोगना पड़ता। ज्ञान से तुम्हारे अगले कर्म नहीं बनेंगे। मेरे नहीं बनते। क्योंकि मैं मन और माया के रूप को जानता हूं। पिछले हैं उनको भोग रहा हूं मैं बच नहीं सकता। सबूत, आप लोग कभी मेरे सपने में नहीं आये। माम चन्द नहीं आया, मन्दिर नहीं आया, मगर रेल गाड़ी तार, क्रासिंग, मेरे माता पिता, पत्नी अब भी कभी २ आते रहते हैं। क्योंकि यह जो मेरा काम है यह निष्काम है। मेरा कोई इसमें लगाव नहीं। मगर वह जो मैंने अपने पेट के लिये काम किया हुआ है उस का संस्कार मेरे दिमाग से अभी तक नहीं निकलता। यह जो काम मैं करता हूं यह ज्ञान का काम है। मैं खेलता हूं मैं इतनी बातें करता हूं। मुझे कुछ पता नहीं होता। तो यह है नाम का व्यौपारी।

पानी सी बानी बही, गुरु छाप दिखाई।
इतना सुन कायल भये, जम ससी नवाई।

यम है क्या ? यम शीश झुका देता है। तुम्हारा मन ही यम है। मैंने एक किताब लिखी है गरुड़ पुराण रहस्य। यमराज है क्या ? यमराज तुम्हारा मन है कोई बाहर से यम नहीं आता। जिनके मन गन्दे होते हैं, मलीन होते हैं, उनके सामने मरते समय डरावनी शक्लें आ जाती हैं। यह है यमराज का आना। और जिनके मन शुद्ध होते हैं साफ होते हैं उनके सामने मरते समय देवी, देवता आ जाते हैं। यह है धर्मराज का आना। बाहर से न कोई राम आता है, न कोई गुरु आता है। तुम्हारा मन ही है। जिस प्रकार के संस्कार दिमाग पर पड़े हुये होते हैं वह फुरते हैं।

संत चले सतलोक को, छोड़ा संसारी।
कुन्दन भये दरबार में, प्रभु नजर गुजारी।

मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि मैं क्या शिक्षा दूं जो मेरे ऊपर काल कर्म का कर्जा च रहे।

कहै कबीर बैठो सही, सिख लेहु हमारी,
काल कलष ब्यापै नहीं, इहै नफा तुम्हारी।

क्या करूं कबीर क्या सिख देता है मुझे नहीं पता। मैंने क्या समझा। तुम मेरी बहनें हो, भाई

हो, मैं किसी बात का दावा नहीं करता मेरी नीयत साफ है। मैंने सच्चाई को क्या समझा ? जितने रूप रंग मेरे अन्तर प्रकट होते हैं यह माया है और है नहीं। इनमें न फंसना और अपने निज रूप में रहना जो अलख अगाध अनामी है, हम उसके अंश है। मेरी समझ में यही सिख आई है और कोई सिख हो तो कबीर को पता होगा।

सब को राधास्वामी !

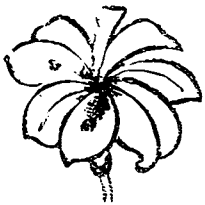

मेरी करबद्ध प्रार्थना

भारत वासियो ! बचपन से किसी चीज़ व तलाश जिस को मैं मालिक या राम समझता था, एक दृश्य द्वारा सन् १९०५ ईशवी में हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिव व्रत लाल जी महाराज के चरनों में ले गई। उन्होंने सन्तमत दिया। इस सन्तमत के समझने में या जिस चीज़ की तलाश थी उसको पाने में बानवे साल का हो गया। अब वह चीज़ क्या निकली ? वह एक अवस्था है जहाँ मैं अपनी हस्ती को, हैपने को, भूल जाता हूं. जो बाकी रह जाता है उस को ब्यान करने के लिये शब्द नहीं मिलते। बस यह मिला मुझे।

क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल, अबल, अज्ञानी जीवों की सहायता, जगत कल्याण और साथ ही जीवों को भव सागर से पार करने का काम लगाया था जिसे आज अड़तीस साल से करता हुआ चला आ रहा हूं, मैंने जो काम किया यह मेरे निज अनुभव के आधार पर है अथवा आप बीती को सामने रखते हुए किया।

गुरु आज्ञा का पालन करने के सिलसिले में मैंने मानवता मन्दिर की नींव रखी। जो कुछ मैंने कहा वह पुस्तकों अथवा मानव मन्दिर पत्रिका के रूप में आज कल प्रकाशित होता है। ब्राह्मण होने के नाते जो प्रकाशन मन्दिर से होता है उसका मूल्य नहीं रखा क्योंकि ब्राह्मण के लिये वेद बेचना पाप है, वेद नाम है ज्ञान का। पुस्तकें बड़ी होती हैं और दिन प्रति दिन मांग बढ़ रही है। इसलिये मैं हाथ बांध कर कहूंगा कि जिन सज्जनों को मेरे अनुभव से सहमति न हो, यूंहि किताबें मंगवाकर, क्योंकि यह मुफ्त मिलती हैं, मन्दिर की हानी न करें।

अब किताबें अंग्रेजी और पंजाबी भाषा में भी मिलती हैं जो कि निम्नलिखित हैं।

ਪੰਜਾਬੀ ਕਤਾਬਾਂ ਦੀ ਸੂਚੀ

1. ਪੰਜ ਨਾਮ ਦੀ ਵਿਗਿਆਨਕ ਵਿਆਖਿਆ, 2. ਅਨੁਭਵ ਦਾ ਨਿਚੋੜ ਮਾਨਵਤਾ। 3. ਸਚਾਈ ਦਾ ਨਿਚੋੜ।
4. ਮਾਨਵਤਾ। 5. ਮਾਨਵ ਕਲਿਆਣ। 6. ਸੱਚਾ ਧਰਮ ਮਾਨਵਤਾ। 7. ਸੱਚਾ ਸਨਾਤਨ ਧਰਮ ਅਥਵਾ ਸੱਚਾ ਮਾਨਵ ਧਰਮ।

अंग्रेजी भाषा में साहित्य

1. A Word to Americans
2. A word to Conadians
3. Manavta the true religion
4. Religious Research
5. Weight of Soul
6. Truth Always Wins
7. Essence of Truth
8. Science of God Realization
9. True Sanatan Dharama or True Religion of Humanity
10. Jeewan Mukti

जिन को ज़रूरत हो वह मंगवा सकते हैं हम बिना मूल्य भेज देंगे। मगर यह मुफ्त का काम कब तक चलेगा ? इसलिये जो सज्जन यह समझते हैं कि जो कुछ मैंने इन किताबों में लिखा है इस में कुछ सच्चाई है, इस पर अचरण करने से इन्सान का पारिवारिक, समाजिक और आत्मिक जीवन सुधर कर निर्वाण को प्राप्त हो सकता है तो यथा शक्ति मन्दिर की सहायता करें ताकि यह सब काम जारी रखा जा सके।

सरकार के आयकर के नियमानुसार ट्रस्ट वालों को साल में जितनी आय अथवा दान आता है वह उसी

साल मैं खर्च करना पड़ता है इसलिये मैंने जनता, विशेष कर गरीब रोगियों के इलाज में सहायता करने के लिये तीन हस्पताल एलोपैथिक, डेन्टल व होमियोपैथिक खोले हुए हैं मगर मुसीबत यह है कि बजाय गरीबों के अमीर आदमी अधिकतर इलाज कराने के लिये आते हैं। इसलिये अगर कोई सज्जन इस काम में सहायता करना चाहता है तो करे मगर यह विनती अवश्य करूंगा कि जो धनी लोग हैं वह यहां हस्पताल से मुफ्त दवाई न लें।

भारत वासियो ! मैंने जो कुछ किया निज स्वार्थ या संतमत के पक्ष में इसे सच्चा सिद्ध करने लिये नहीं किया। मालिक के मिलने की तलाश थी जिस को हम ईश्वर परमेश्वर समझते थे। मेरा भाग्य अथवा दुर्भाग्य इस संतमत या राधास्वामी मत में ले आया। यहां इन संतों ने तमाम धर्मों, वेदान्त या सूफीमत तक का भी खण्डन किया हुआ है। आत्मा खण्डन सहन नहीं कर सकती थी इसलिये प्रण किया था अपना अनुभव कह जाऊंगा। दाता दयाल जी महाराज ने काम दिया था। तुम ही सोचो, राधास्वामीमत वालों की किताबों में संतों की इतनी

बढ़ाई लिखी हुई है कि वह ईश्वर परमेश्वर को पैदा करने वाले हैं, बस, इसी एक राज़ को जानने के लिये मैंने अपना जीवन खो दिया कि संतमत वालों के पास क्या चीज़ है जो ईश्वर और परमेश्वर को भी पैदा करने वाले समझते हैं। दाता दयाल जी महाराज पर मेरा विश्वास तो नहीं टूटा मगर बानी भेद नहीं देती थी। इसलिये प्रण किया था कि जो समझ में आयेगा बता जाऊंगा और दाता जी ने कहा था कि शिक्षा बदल जाना। हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज ने भी हुक्म दिया था कि निर्भय होकर काम कर जाना, सो कर चला, मेरा निज अनुभव मानता है कि संत बनना कोई सरल काम नहीं है। मुझ पर समय समय पर संतपने की हालत तारी होती है, चोबीस घण्टे नहीं। अब यह प्रार्थना है कि यह संसार मेरे लिये सदा के लिये लोप हो जाय और अपनी हस्ती खोकर ज्ञात में समा जाऊ मगर यह उसकी इच्छा है।

फकीर